पिंगल–सार

रामकवि और

लेखक

रामकवि और

वेताब

प्रकाशक

नारायण प्रसाद

वेताब

मूल्य ।।।)

मुद्रक

वेताब प्रिंटिंग वर्क्स

चाह रहट देहली

मिलने का पता

वेताब प्रिंटिंग वर्क्स

चाह रहट देहली

ओ३म्

परमात्मने नमः

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः—

(यजुर्वेद अध्याय ४० मन्त्र ८)

पिंगल-सार

पाठ १

वर्ण-व्याख्या

प्यारे पिङ्गलार्थियो ! याद रक्खो कि अक्षर तीन प्रकारके होते हैं :—

१ लघु । २ गुरु । ३ प्लुत ।

प्लुतका सत्कार वेद मन्त्रोंमें है या सङ्गीत शास्त्रमें । पिङ्गलमें केवल लघु गुरु ही से काम चलता है । लघुका अर्थ है छोटा । गुरुका अर्थ है बड़ा ।

प्रश्न—अक्षरोंमें छोटा बड़ा कैसा ? अक्षर तो सब समान हैं ।

उत्तर—सब अक्षर समान नहीं हैं स्वरोंमें अ, इ, उ, ऋ, ऌ, यह पांच अक्षर लघु हैं इनकी एक एक मात्रा होती है । आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, यह गुरु हैं इनकी दो दो मात्राएं होती हैं । मात्राको 'कल' 'कला' 'मत्त' और 'मत्ता' भी कहते हैं ।

प्रश्न—यह सबके सब स्वर हैं तो इनमेंसे कुछको लघु, कुछको गुरु क्यों मान लिया? लघुकी एक मात्रा, गुरुकी दो मात्रा क्यों गिनते हैं ?

उत्तर—लघु अपने अंगमें अकेला है और गुरु दो अक्षरोंसे मिलकर बना है। डबल बल होनेके कारण गुरुकी दो मात्राएं मानी जाती हैं।

प्रश्न—गुरु अक्षर किस प्रकार दो दो अक्षरोंसे मिलकर बने हैं ?

उत्तर—दो 'अ' मिलकर "आ"। दो 'इ' मिलकर "ई" होती है इसी प्रकार सबको नीचे लिखी क्रियामें देखो:—

अ	+	अ	=	आ	अ	+	ए	=	ऐ
इ	+	इ	=	ई	अ	+	उ	=	ओ
उ	+	उ	=	ऊ	अ	+	ओ	=	औ
ऋ	+	ऋ	=	ॠ	अ	+	ं	=	अं
अ	+	इ	=	ए	अ	+	:	=	अः

प्रश्न—स्वरोंका स्वरूप तो समझमें आ गया, अब क, ख, ग, आदि 'ह' तक, इनको लघु मानें या गुरु ?

उत्तर—'क' से 'ह' तक जितने अक्षर हैं ये सब व्यञ्जन कहलाते हैं। ये स्वयं न लघु हैं न गुरु, किन्तु हल् हैं। इनमें लघु स्वर मिलता है तो लघु होते हैं, गुरु स्वर मिलता है तो गुरु हो जाते हैं। जैसे:- 'द्' में छोटी 'इ' मिली तो 'दि' रूप हुआ, मिलने वाला स्वर लघु था इसलिये सम्मिलिताक्षर भी लघु ही रहा, इसकी मात्रा एक होगी।

'क्' में 'ऊ' मिला तो "कू"। 'ए' मिला तो "के"। ये दोनों गुरु स्वरोंसे मिलकर बने हैं इसलिये इनकी संज्ञा गुरु होगी। लघु और गुरुका दूसरा नाम ह्रस्व और दीर्घ भी है किन्तु पिङ्गलमें लघु गुरु शब्द ही प्रयोगमें आते हैं।

ऊपर जिन अक्षरोंका वर्णन हुआ ये तो अपने स्वरूपसे ही लघु अथवा गुरु हैं और देखते ही पहचाने जाते हैं, परन्तु इनके उपरान्त ऐसे अक्षर भी हैं जो लिखनेमें लघु लिखे जाते हैं परन्तु एक नियमके अधीन गुरु हो जाते हैं।

प्रश्न—वह नियम क्या है ?

उत्तर—शब्दके अन्त अथवा मध्यमें जब संयुक्त (मिला हुआ) अक्षर आता है तो अपने पूर्व अक्षरको गुरु कर देता है जैसेः—

पिङ्गल, सत्य, सर्व, मध्य, विश्राम, चक्र इत्यादि, इनमें ङ्ग, त्य, र्व, ध्य, श्रा, क्र, संयुक्ताक्षर हैं, सबके पूर्व पि, स, स, म, वि, च, लघु अक्षर हैं परन्तु संयुक्त अक्षरोंने इन्हें गुरु कर दिया है।

संयुक्त अक्षर अपने पूर्वको गुरु करता है परन्तु आप लघु है तो लघु ही रहेगा गुरु है तो गुरु।

प्र०—शब्दके अन्त और मध्यमें ही क्यों कहा? यदि आदिमें संयुक्त अक्षर आयगा तो क्या अपने पूर्वको गुरु नहीं करेगा?

उ०—समझ कर प्रश्न करो, आदि वालेके पूर्वमें कोई होता ही नहीं है, यदि होता है तो वही आदि है, फिर उसके आदि में कोई नहीं हो सकता अर्थात् "आदिका आदि" हो ही नहीं सकता। हां दो शब्दोंको समास रूपमें एक जगह लिखें और दूसरे शब्दका प्रथम अक्षर संयुक्त हो तो पहले शब्दके अन्तिम लघु अक्षरको गुरु मानना या लघु मानना छन्दकी जुरूरत या कविकी इच्छा पर निर्भर है जैसे:- हरि प्रसाद, पति व्रता, इनमें "रि" और "ति" को गुरु मानें या लघु, दोनों तरह शुद्ध है।

प्रश्न—अनुस्वार और विसर्ग वाले अक्षर तो गुरु संज्ञामें आगये परन्तु जो अक्षर चन्द्रविन्दुके साथ बोला जाय जैसे:-- "फँस गया" "हँस पड़ा" का पहला अक्षर,--उसे गुरु मानें या लघु ?

उ०—जो अक्षर अर्द्ध अनुनासिक बोले जाते हैं—जैसे तुम्हारे उक्त उदाहरणमें हैं—वो सर्वदा लघु रहते हैं।

बार बार लघु गुरु लिखनेमें लेख शैली बिगड़ती थी समय और स्थान भी अधिक जाता था इसलिये कवियोंने दोनोंके ही चिह्न बना लिये हैं:

लघु "।" खड़ी पाई। गुरु "ऽ" वक्ररेखा

नोट—संस्कृतमें अनुस्वार वाले पूर्वको गुरु मानते हैं परन्तु हिन्दीमें किसी स्थानमें यह नियम नहीं है जैसे "तुम्हारा" "कन्हैया" का "तु" "क" लघु ही रहता।

पाठ २

गण

गण दो प्रकारके होते हैं :—मात्रिकगण, वर्णिक गण

क—मात्रिक गण

मात्रिक गणोंमें केवल मत्राओंकी गिनतीसे प्रयोजन है, वर्ण न्यूनाधिक हों तो पर्वा नहीं, लघु गुरुका क्रम भी ध्यान देने योग्य नहीं है जैसे "सीता" शब्दमें दो गुरु वर्ण होनेसे चार मात्राएं हुईं यह "डगण" है तो "भारत" में तीन अक्षर हैं (एक गुरु दो लघु इसकी पर्वा नहीं) यह भी "डगण" है। हां उप-भेदोंमें नाम अलग अलग हो जायगा।

मात्रिक गण५ हैं,पांचों टवर्गके एक एक अक्षरसे नामाङ्कित हैं इनकी मात्राओंको याद रखनेका क्रम ऐसा सरल है कि साधा-रण बुद्धिवाला भी भूल नहीं सकता एक एक अक्षर बढ़ते जाइये और एक एक मात्रा घटाते जाइये मात्रिक गणोंका फ़ैसिला हुआ। नीचेका कोष्ठक देखते ही समझ जाइयेगा।

१	ट-गण	=	६	मात्रा
२	ठ-गण	=	५	”
३	ड-गण	=	४	”
४	ढ-गण	=	३	”
५	ण-गण	=	२	”

यह तो हुआ मोहनभोगका एक ग्रास, ज़बान पर आया कि हल्क़में उतरा, परन्तु आगे ज़रा टेढ़ी खीर है। सुनिये :—टगणमें ६ मात्राएं हैं परन्तु लघु गुरुका क्रम अचल नहीं है चाहे जिस वर्णको गुरु, चाहे जिसको लघु लिख सकते हैं हर रूपमें मात्रा ६ होनी चाहियें, इस स्वतन्त्रताका फल यह होगा कि एकके अनेक रूप बन सकेंगे। उदाहरणमें ठगणको लीजिये, इसकी तीन मात्राएं हैं तो यह तीन तरह पर लिखा जा सकेगा, यथा—

IS	=	३	रमा
SI	=	३	राम
III	=	३	गगन

इसी प्रकार प्रत्येक गणके जितने रूप बन सकते हैं और उन रूपोंके जो जो नाम होते हैं सब नीचे लिखे जाते हैं :—

१—६ मात्रावाला टगण, १३ भेद

संख्या	नाम	रूप	उदाहरण
१	हर	SSS	सीताजी
२	शशि	IISS	रघुवंशी
३	सूर्य	ISIS	दयानिधे
४	शक्र	SIIS	गिरजुगुना
५	शेष	IIIIS	गिरिवरदा
६	अहिं	ISSI	दयानन्द
७	कमल	SISI	प्रह्लाद

८	धाता	।।।ऽ।	पवनपुत्र
९	कलि	ऽऽ।।	रामायण
१०	चन्द्र	।।ऽ।।	शिवशङ्कर
११	ध्रुव	।ऽ।।।	रमारमण
१२	धर्म	ऽ।।।।	नन्द सुवन
१३	शाली	।।।।।।	मधुर वचन

सूचना—पृष्ठ ८ में लिखे हुए दसवें नामको "चन्द्र" लिखा है और दूसरे नामको शशि, इन दोनोंका एक अर्थ होनेसे भ्रम होता है इसलिये रण-पिंगल कारने दसवें रूप "चन्द्र" का नाम "कमठ" भी लिखा है। हम भी इसीको उचित समझते हैं।

२—५ मात्रावाला ठगण, ८ भेद

संख्या	नाम	रूप	उदाहरण
१	इन्द्रासन	।ऽऽ	विहारी
२	वीर	ऽ।ऽ	शारदा
३	चाप	।।।ऽ	भगवती
४	हीर	ऽऽ।	गोपाल
५	शेखर	।।ऽ।	जगदीश
६	कुसुम	।ऽ।।	दयानिधि
७	अहिगण	ऽ।।।	लोकपति
८	पापगण	।।।।।	शशिवदन

३—४ मात्रावाला डगण, ५ भेद

संख्या	नाम	रूप	उदाहरण
१	कर्ण	S S	सीता
२	करतल	I I S	गिरिजा
३	पयोधर / मुरारि	I S I	महेश
४	वसुचरण	S I I	भारत
५	विप्र	I I I I	गणपति

४—३ मात्रावाला ढगण, ३ भेद

संख्या	नाम	रूप	उदाहरण
१	रसवास / ध्वज	I S	रमा
२	नन्द / ग्वाल	S I	राम
३	[illegible] / [illegible]	I I I	कमल

५—२ मात्रावाला णगण, २ भेद

१	हार / कुंडल	S	श्री
२	सुप्रिय	I I	शिव

[illegible]

लिखना काफ़ी हो जाता है, जैसे दो गुरु एक लघु वाला शब्द बताना है तो "हीर" कह देना काफ़ी है लिखने वाला "लाहोर" के समान लिख लेगा; वर्णिक गणोंसे मात्रिक गणोंमें यही विशेषता है क्योंकि ३ अक्षरोंसे अधिक हों तो वर्णिक गणके राज्यसे बाहर हो जाते हैं जैसे चार लघुका काम हो तो वर्णिक गण लाचार हैं, मात्रिक गण द्वारा झट कह दिया जायगा कि "विप्र" लिखो, इत्यादि ।

उक्त पांचों गणोंके (भेदों सहित) अनेक नाम लिख लिखकर अभ्यास बढ़ाओ

ख—वर्णात्मक गण ।

प्रत्येक गण तीन अक्षरोंका होता है । लघु गुरुके क्रमसे इनके नाम, रूप आठ बन जाते है यथाः—

संख्या	नाम	लक्षण	रूप	संक्षिप्तनाम	उदाहरण
१	मगण	तीनोंगुरु	ऽऽऽ	म	माताजी
२	नगण	तीनोंलघु	।।।	न	नगर
३	भगण	आदिगुरु	ऽ।।	भ	भारत
४	जगण	मध्यगुरु	।ऽ।	ज	जटायु
५	सगण	अन्तगुरु	।।ऽ	स	सरिता
६	यगण	आदिलघु	।ऽऽ	य	यशोदा
७	रगण	मध्यलघु	ऽ।ऽ	र	रामजी
८	तगण	अन्तलघु	ऽऽ।	त	तालाब

हमारे इन आठ उदाहरणोंमें याद रखनेका गुर मसाला मौजूद है. देखिये उदाहरण वाला शब्द जिस अक्षरसे शुरू होता है वही गण है।

पदके चरणमें गणोंकी गिनती आदिवाले अक्षरसे हुआ करती है, जहां तक तीन तीन अक्षरोंका पिण्ड बनता चला जाय वहां तक गण समझो, उसके बाद एक अक्षर बचेगा, या दो, या कुछ नहीं। कुछ नहीं है तो कुछ नहीं। एक या दो लघु गुरु बचे तो उनके स्थानमें ल, ग, (जैसी सूरत हो) लिखनेकी प्रथा है। सूक्ष्म संकेतमें गणका पहला अक्षर (संक्षिप्त नाम) लिखा करते हैं।

गणागण और दग्धाक्षर (*)

कवियोंने गणोंके साथ देवता, फल, शुभ, अशुभ, दग्धाक्षर इत्यादि कल्पनाएं भी निरूपण किये हैं जो निस्सार व्यर्थ हैं। कविता से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। सुख, दुःख, हानि, लाभ, यह

उत्तर—इतिहास साक्षी है कि बड़े बड़े कवियोंने बड़े बड़े संकट झेले हैं। बड़े बड़े दुःख सहन किये हैं, भोजन तकके लाले हो चुके हैं तो क्या वो लोग दग्धाक्षरोंको नहीं जानते थे? जानते थे तो बुरा फल क्यों हुआ?

प्रश्न—किसी और कर्मसे हो गया होगा।

उत्तर—यदि "और कर्म" ने शुभाक्षरोंको निष्फल कर दिया तो "और कर्म" ही मुख्य रहा।

प्रश्न—शायद अनुभव होनेके बाद दग्धाक्षर सिद्ध होने पर प्रसिद्ध हुए हों।

उत्तर—तो वह प्रक्षिप्त विषय हुआ इसलिये भी अमान्य है।

प्रश्न—नहीं वर्तमान कवियोंको उस नियमका सम्मान करनेमें सुख होना संभव है।

उत्तर—वर्त्तमान कालमें भी शुभाशुभ और दग्धाक्षरोंको जानने वाले सुकवि मौजूद हैं जो अशुभ और दग्धाक्षरोंके लिखने वाले प्रतीत होते हैं।

प्रश्न—इस समय गणागणका ध्यान करके लिखें तो यह भी एक कर्म है जिसका फल भविष्यमें सुख होगा।

उत्तर—कर्मके लिये बुरी भली चेष्टाका होना ज़रूरी है परन्तु अक्षर-विन्यासमें कोई बुरी भली चेष्टा नहीं होती। यदि किसीकी चुग़ली (निन्दा) करें जो एक पाप-कर्म है तो क्या 'यगण' 'नगण' आदि शब्दोंसे चुग़ली शुरू करके हम उसका फल आनन्द और सुख पासकते हैं? कदापि नहीं,

किसी अनाथालय या विद्यालयके लिये चन्देकी अपील करने वाला 'भगण' या 'तगण'से शुरू हो जाय तो क्या उस पुण्य कर्मका फल दुःख होगा? ऐसा हो तो न्यायी परमात्मा अन्यायी ठहरता है।

प्रश्न—क्या किसी उत्तम कविकी कवितासे आपके पक्षका समर्थन होता है?

उत्तर—बाणभट्ट और कालीदासादिको सबने उत्तम कवि माना है, उनके जैसा काव्य-मर्मज्ञ होना मुश्किल है परन्तु उन्होंने इसकी ज़रा भी पर्वा नहीं की:— बाण भट्ट अपने सर्व मान्य ग्रन्थ "कादम्बरीको" दुःखाक्षर "र" और अशुभ गण "जगण" से शुरू करते हैं, कालीदासने भी ऋतुसंहार "जगण" से आरम्भ किया है देखिये:—

१—"रजोजुषे जन्मनि०"—कादम्बरी—कवीन्द्र बाणभट्ट
२. "प्रचण्ड सूर्यः०" ऋतुसंहार—महाकवि कालिदास
३. [illegible]०" दयानन्ददिग्विजय महाकाव्य—कविरत्न पं० अखिलानन्द शर्मा
४. [illegible]

प्रश्न—[illegible]

उत्तर—[illegible]

सिद्ध होता है कि गण अगण और दग्धाक्षरोंका झगड़ा किसी वहमी दिमाग़की उपज है, यदि पिङ्गलाचार्य किसी गणको अशुभ मानते तो आभार, तोटक, इन्द्रवज्रा, गङ्गोदक आदि छन्द कदापि निर्माण न करते।

इस विचारके आधार पर हम आपको निस्सार परिश्रम और पाखण्ड कुण्डमें डालना नहीं चाहते। केवल मनके भाव उच्च और पवित्र रखिये, कविता स्वयं उच्च और पवित्र होगी, जिसका फल भी निस्सन्देह शुभ होगा। धर्म, सत्य, परोपकार इत्यादिको मनसे प्यार करते रहो, ह, र, भ, झ, ष, यह दग्धाक्षर पद्यके आदिमें आकर भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

पाठ ३

संख्या सूचक शब्द

१, २, ३, ४ इत्यादिके स्थानमें ऐसे शब्द कहनेका रिवाज है जो गिनतीमें उतने ही मशहूर हों जितने अपेक्षित हैं। जैसे चार कहनेकी इच्छा है तो "वेद" कहदें। तीनके बदले "काल" ६ के स्थानमें "दर्शन"। संख्या बोधक शब्द नीचे लिखे जाते हैं।

शून्य " ० " आकाश, नभ, गगन, ख, शून्य, अभ्र

१—शशि, चन्द्र, आत्मा, भू, ब्रह्म, ईश, रविरथचक्र, गजमुख-दन्त, महि, शुक्रदृष्टि

२—नयन, नेत्र, लोचन, सर्प जिह्वा, भुजङ्ग रसना, नदीकूल
पक्ष, कर, भुज, नयन, ओष्ठ, जानु

३—गङ्गा, शिवनेत्र, गुण, अग्नि, पावक, काल, राम, ताप, नाड़ी

४ वेद, विधिवदन, उपाय, युग, आश्रम, वर्ण, सेनाङ्ग,
[illegible], पशुपद, मध्यपद

५—पाण्डव, शिवमुख, प्राण, बाण, कन्या, शर, बाण, भूत,
[illegible], तत्त्व, यम, नियम

६ दर्शन, रस, ऋतु, राग, भ्रमरपद, [illegible], शास्त्र,
अयनमास, [illegible]

७ मुनि, द्वीप, धातु, स्वर, सूर्याश्व, भानु

८ दिग्गज, वसु, सिद्धि, योगाङ्ग, याम, दिक्पाल, सिद्धि कर्ण

९—नन्द, निधि, ग्रह, भक्ति, अंक,

१०—दिशा, अवतार, [illegible], [illegible]

११—रुद्र, शिव, हर

१२—राशि, भानु, रवि, सूर्य, मास, गुरु-[illegible]

१३—[illegible], [illegible], [illegible]

१४ [illegible], [illegible]

१५—तिथि

१६ [illegible], [illegible], [illegible]

१७ [illegible] १७ [illegible]
[illegible]

१८ पुराण, [illegible]

१९ [illegible] १९ [illegible]

२० [illegible]

सूचना—(क) सम्वतादि बड़ी संख्यामें केवल ६ तक के अंक काममें आते हैं।

(ख) उक्त नामोंके अतिरिक्त इनके पर्य्याय-वाची शब्द भी लिखे जा सकते हैं।

(ग) 'लोक' शब्द ३ का भी बोधक है और ७ का भी 'दोष' ३ और १०का सूचक है। ऐसे भ्रमोत्पादक शब्द जिनके एकसे अधिक अर्थ हों न लिखो।

(घ) इकाई, दहाई, सैंकड़ा, हज़ार आदिको आप जानते ही हैं। इकाईके बाद बाईं ओरको जो दूसरा अङ्क लिखते हैं वह दहाई, तीसरा सैंकड़ा, चौथा हज़ार है इसी क्रमके अनुसार संख्या वाचक शब्दोंसे भी संख्या बनाते हैं। जैसे ३६ लिखना है तो यूं कहेंगे ऋतु+गुण। या दर्शन+काल। २४६ लिखना हैतो अङ्क+वेद+नेत्र इत्यादि

पाठ ४

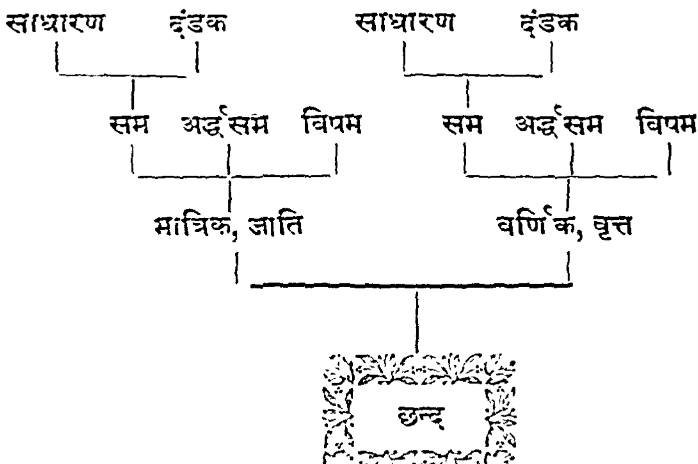
छन्दके लक्षण

जिस वाक्यरचनामें मात्राओंकी समान गिनती, लघु गुरु वर्णोंका क्रम, विराम, (अर्थात् किसी स्थानमें ठहरना, इसीको "यति" कहते हैं) गति, और प्रास आदिका नियम पाया जाय वह छन्द है। छन्द दो प्रकारके होते हैं "वैदिक" "लौकिक"।

वेदोंमें जो छन्द आये हुए हैं वो वैदिक हैं हम केवल लौकिक ही का वर्णन करेंगे।

लौकिक छन्द दो प्रकारके होते हैं मात्रिक। वर्णिक।

मात्रिकको 'जाति' वर्णिकको 'वृत्त' भी कह देते हैं। इन दोनों भेदोंके तीन तीन साधारण भेद नीचेके नक्शेमें देखो।



नक्शेकी तफसील

१—'मात्रिक' वह है जिसमें मात्राओंकी गिनती की जाय, अक्षर चाहे न्यूनाधिक हों,जैसे तुलसीकृत रामायणमें चौपाई दोहा

२—'वर्णिक' वह है जिसके चारों चरणोंमें लघु गुरुका क्रम भङ्ग न हो। कल्पना करो कि १९ अक्षरके छन्दमें ४, ५, ७, ९, १०, ११, १५, १८वां अक्षर लघु,शेष गुरु हों तो चारोंमें यही नियम हो जैसे :—

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
दी ना ना थ अ ना थ दुः ख ह र ता, आ प त्ति मे री ह रो
घे री है मृ ग रा ज गा य क पि ला, हे कृ ष्ण र क्षा क रो
इसी रूपसे चारो चरण जानो

इसमें मात्रा गिननेकी ज़रूरत नहीं, मात्राओंकी गिनती स्वयं समान होगी।

३—सम—जिसके चारों चरण समान हों जैसे चौपाई सवैया तोटक आदि।

४—'अर्द्ध सम' जिसके पहले + तीसरेमें, दूसरे + चौथेमें समानता हो। याद रखिये कि पहले और तीसरे चरणको विषम चरण, दूसरे और चौथेको सम चरण कहते हैं। अर्थात्'सम' 'विषम' चरणोंका भी नाम है और छन्द भेदका भी।

५—'विषम' जिसके चरण समान न हों जैसे 'आर्या' (एक छन्द है)

६—'साधारण' मात्रिकमें ३२ मात्राके अन्दर अन्दर और वर्णिकमें २६ वर्णके अन्दर अन्दर साधारण है।

७—'दण्डक' जो साधारणकी सीमासे आगे बढ़ जाय।
(३२ मात्रा या २६ वर्णसे अधिक हो) वह दण्डक कहलाता है।

पाठ ५

प्रत्यय

प्रत्यय शब्दका जो अर्थ व्याकरण शास्त्रमें है, पिङ्गलमें वह नहीं है। यहाँ तो केवल एक पारिभाषिक (इस्तलाही) शब्द है। प्रत्यय ९ हैं, इनके द्वारा छन्दोंकी संख्या, रूप, रूपान्तर इत्यादि जाने जाते हैं।

१ प्रस्तार। २ सूची। ३ पाताल। ४ उद्दिष्ट। ५ नष्ट। ६ मेरु। ७ खण्ड मेरु। ८ पताका। ९ मर्कटी। इनके नाम हैं

१ प्रस्तार

चरणकी मात्राएं मालूम हों तो प्रस्तार द्वारा जान सकते हैं कि इतनी मात्राओंसे कितने रूप बन सकते हैं। फिर उन छन्दोंके नाम चाहे अलग अलग हों परन्तु संख्या न्यूनाधिक नहीं होगी। पुस्तकें टटोलनेकी ज़रूरत नहीं, गणितकी कृपासे हुक्म लगा सकते हैं कि इतनी मात्रा वाले इतने ही छन्द होंगे। यही इस प्रस्तार प्रत्ययका फल है।

सम, विषम पहले समझा चुके हैं (देखो पृ०१६ पंक्ति ६, १२)

१, ३, ५, ७, आदि विषम अंक हैं। २, ४, ६, इत्यादि सम। जिस संख्याका प्रस्तार करेंगे वह सम होगी या विषम। यदि सम है तो उसके आधे गुरु चिह्न लिख लो—क्योंकि गुरुकी दो मात्रा होती हैं—जैसे १२ मात्राके प्रस्तारमें ६ गुरु ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

इस प्रकार लिखे जाएंगे। विषम मात्राओंके प्रस्तारमें पहले एक लघु चिह्न लिख कर बाक़ीके आधे गुरु दाहिनी ओर लिखो जैसे ९ मात्राके प्रस्तारमें ।, ऽ ऽ ऽ ऽ यह रूप पहले लिखना चाहिये।

शंका—विषम संख्यामें एक लघु पहले ही क्यों लिखें? दाहिनी ओर सबके अन्तमें ऽ ऽ ऽ ऽ। लिखनेसे भी तो गिनती वही रहेगी।

समा०—शंका चुस्त है। मानों इस शंकाने विषममें क्रियाकी दो सूरतें बना दीं। ऐसी ही दूसरी शंका यह भी हो सकती है कि "सर्व गुरु पहले क्यों रक्खें? सबके सब लघु हीं क्यों न रक्खें?" बहुत ठीक। अब चार सूरतें हो गईं। पांच मात्रामें चारों सूरतें—।[१] ऽ ऽ—ऽ[२] ऽ ।—।,[३] । । । ।—।[४] । । । ।'।

दिलवर! इसी वास्ते इस विषयमें दो आचार्य्योंके दो मत हैं "पिङ्गलमत"। "अगस्त्यमत"। पिङ्गलाचार्य कहते हैं कि "अवरोह-क्रम" अर्थात् (उतरना) गुरुसे लघुकी तरफ़ जाना अच्छा है, अगस्त्याचार्यकी आज्ञा है कि "आरोह-क्रम" अर्थात् (चढ़ना) लघुसे गुरुकी तरफ़ बढ़ना सरल है। एक कहता है कि क्रिया बाईं ओरसे आरंभ करो। दूसरा कहता है कि दाहिनी ओरसे। अस्तु, कहनेमें यह चार तरीक़े अलग प्रतीत होते हैं परन्तु नतीजेमें चारों एक हैं जिन्हें हम आगे लिख कर दिखाते हैं:—

एक मात्राका रूप एक ही हो सकता है जैसे "।" दो मात्राओंके दो रूप हो सकते हैं—"ऽ" "। ।" तीन मात्राओंके तीन रूप

—। S, S ।, । । ।, तीन मात्राओंमें कोई चौथी शक्ल नहीं बन सकती। एकसे तीन तक तो साधारण हिसाब है परन्तु आगे काम बढ़ता है।

४ मात्रके	५ रूप		९ मात्राके	५५ रूप	
५	„	८ „	१०	„	८९ „
६	„	१३ „	११	„	१४४ „
७	„	२१ „	१२	„	२३३ „
८	„	३४ „	१३	„	३७७ „

क़ायदा यह है कि ऊपरके दो रूपोंकी मीज़ान तीसरेकी संख्या होती है अर्थात् जिस अंकके रूप जानने हों उसके रूपसे ऊपर वाले दो रूपोंका योग फल जो कुछ है वही अभीष्टांकके रूपोंकी संख्याहै, जैसे ५ मात्राकी छन्द संख्या जाननी है तो ४ और ३की छन्द संख्या जोड़ लो, ५ मात्राकी छन्द संख्या बन जायगी, १२ मात्राकी जाननी हो तो ११, १० की जोड़लो

११ की १४४+१० की ८९ = २३३

यही १२ मात्रावाले छन्दोंकी संख्या है।

१			१
२			२
३	२+१	=	३
४	३+२	=	५
५	३+५	=	८
६	८+५	=	१३ इत्यादि

१—शंकाओंसे जो चार सूरतें पैदा हुई हैं उनमेंसे पहली क्रिया इस प्रकार है :—

जितनी मात्राओंका प्रस्तार निकालना हो उन्हें रेखाओंमें पहली सूरतके अनुसार लिख लो (देखो पृ० २०, २१) यही पहला रूप है इसमेंसे दूसरा रूप इस तरह निकालो कि बाईं ओरसे दाहिनी ओर (लघुको छोड़कर) जो सबसे पहला गुरु आय उसके ठीक नीचे लघु चिह्न—खड़ी रेखा—लिख दो—यही रेखा नियम की जड़ है—इसकी दाहिनी ओर जितने लघु गुरु हों ज्यूंके त्यूं नक़्ल कर दो और गिनो कि मात्राओंकी संख्या पहले रूपसे कम तो नहीं है ? बराबर है तो बस उसे न छेड़ो, यदि एक कम है तो बाईं ओर एक लघु रेखा लिख दो, दो कम हैं तो गुरु रेखा लिख दो, तीन कम हैं तो पहले वक्र रेखा फिर सरल, चार कम हैं तो दोनों वक्र, पांच कम हैं तो दो वक्र एक सरल लिखो। इसी तरह युग्मकी गुनजाइश हो वहां तक युग्म, फिर पूर्तिके लिये एक अयुग्म खड़ी रेखा लिखकर पहले रूपके समान दूसरे रूपकी मात्राएं करलो। फिर इस दूसरेमेंसे तीसरा, तीसरेसे चौथा, चौथेसे पांचवां रूप निकालते चले जाओ यहां तक कि सर्व लघुवाला रूप आजाय, अब समझलो कि क्रिया समाप्त हुई और जितने रूप निकले हैं इनसे अधिक नहीं निकल सकते

उदाहरण

एक मात्राका प्रस्तार नहीं होता। दोके दो रूप होते हैं। ३ के ३। ४ के ५। ५ के ८। ६ के १३। ६ मात्रातकका प्रस्तार

मात्रिक गणोंमें पृ० ८ से १० तक देख लो, वो इसी प्रत्ययकी बदौलत बने हैं। वर्ण अथवा मात्राओंकी गिनती समान होते हुए भी जो (वर्णिक तथा मात्रिक) छन्दोंके अनेक नाम रूप दिखाई देते हैं वो इसी प्रत्ययका अनुग्रह है। यहां हम ७ मात्राका प्रस्तार करके दिखाते हैं।

१—	। S S S	१२—	S । । S ।
२—	S । S S	१३—	। । । । S ।
३—	। । । S S	१४—	। S S । ।
४—	S S । S	१५—	S । S । ।
५—	। । S । S	१६—	। । । S । ।
६—	। S । । S	१७—	S S । । ।
७—	S । । । S	१८—	। । S । । ।
८—	। । । । । S	१९—	। S । । । ।
९—	S S S ।	२०—	S । । । । ।
१०—	। । S S ।	२१—	। । । । । । ।
११—	। S । S ।		

२—दूसरी सूरत अन्त लघुका क़ायदा (मात्र लिखनेमें) इससे उल्टा है जो उर्दू वालोंको सीधा मालूम होगा। और कोई अन्तर नहीं है, उदाहरणमें ५ मात्राके रूप दोनों सूरतोंसे लिखते हैं

पिङ्गल मतानुसार (क्रमप्रस्तार)

बाईं ओरसे दाहिनी ओरको	दाहिनी ओरसे बाईं ओरको
।ऽऽ	ऽऽ।
ऽ।ऽ	ऽ।ऽ
।।।ऽ	ऽ।।।
ऽऽ।	।ऽऽ
।।ऽ।	।ऽ।।
।ऽ।।	।।ऽ।
ऽ।।।	।।।ऽ
।।।।।	।।।।।

अगस्त्यमतानुसार (उत्क्रमप्रस्तार)

३—तीसरी सूरत(।, ।।।।)में यह बात ध्यान रखने योग्य है कि पिङ्गल मतमें अवरोह क्रम है इसवास्ते ऊपरसे नोचेको उतरते हैं उसके विरुद्ध इसमें आरोह क्रम है, ऊपरको चढ़ना होगा तो पहला रूप 'सर्व लघु' सबसे नीचे लिखकर पंक्तिके ऊपर दूसरा रूप लिखिये। इसका क़ायदा समझनेके लिये पहले दो शब्दोंका अर्थ सुन लीजिये—

"उप" कहते हैं समीपको, इसीलिये उप+अन्त्य = उपान्त्य, अन्तिमके पासवाला, इसी तरह हम एक शब्द रखते हैं उप+आद्य= उपाद्य, अर्थात् आदिके पासवाला (इसे आदि—निकट-कल भी कहते हैं)। पिङ्गल मतमें तो जो पहला गुरु मिले उसके नोचे लघु लिखा जाता था, यहां जो पहला उपाद्य लघु मिले * उसीके ऊपर वक्र रेखा चढ़ा दो, दाहिनी ओर जितने लघु गुरु हों उन्हें

* उपाद्य लघु न होतो तीसरा अंक देखो, तीसराभी लघु नहो तोचौथा, आदि

ज्यूंका त्यूं नक्ल कर दो, फिर कमीको बाईं ओर पूरा करनेमें आवश्यकतानुसार सब लघु लिख डालो, इसीप्रकार जहांतक सर्व गुरु बन सकें, बनाते चले जाओ रूपसंख्या निकल आयगी।

४—इसका उलटा दाहिनी ओरसे वईं ओरको लिखें तो चौथी सूरत होगी। दोनोंको पांचमात्रामें दिखाते हैं।

	तीसरी सूरत	चौथी सूरत	
८	। S S	S S ।	८
७	S । S	S । S	७
६	। । । S	S । । ।	६
५	S S ।	। S S	५
४	। । S ।	। S । ।	४
३	। S । ।	। । S ।	३
२	S । । ।	। । । S	२
१	। । । । ।	। । । । ।	१

अगस्त्य मतमें सरल संख्या उलटी गिनी जाती है अर्थात् ८ को १। ७को २। १ को आठवां रूप कहते हैं मानो यह उत्क्रम पिङ्गलमतके अनुकूल कर देता है।

तुलनार्थ चारों सूरतें ५ मात्रावाली लिखते हैं

१	२	३	४
। S S	S S ।	S । S	S S ।
S । S	S । S	। । । S	S । S
। । । S	S । । ।	S S ।	S । । ।
S S ।	। S S	। । S ।	। S S
। । S ।	। S । ।	। S । ।	। S । ।
। S । ।	। । S ।	S । । ।	। । S ।
S । । ।	। । । S	। । । । ।	। । । S
। । । । ।	। । । । ।		। । । । ।

। यहां उपान्त्य गुरु है तो तीसरे अंतका गुरु ऐसा नहीं है।

३२ मात्रा तकका प्रस्तार विम्ब

मात्रांक	रूपाँक	मात्रांक	रूपाँक
१	१	१७	२ ५ ८ ४
२	२	१८	४ १ ८ १
३	३	१९	६ ७ ६ ५
४	५	२०	१ ० ९ ४ ६
५	८	२१	१ ७ ७ १ १
६	१ ३	२२	२ ८ ६ ५ ७
७	२ १	२३	४ ६ ३ ६ ८
८	३ ४	२४	७ ५ ० २ ५
९	५ ५	२५	१ २ १ ३ ९ ३
१०	८ ९	२६	१ ९ ६ ४ १ ८
११	१ ४ ४	२७	३ १ ७ ८ १ १
१२	२ ३ ३	२८	५ १ ४ २ २ ९
१३	३ ७ ७	२९	८ ३ २ ० ४ ०
१४	६ १ ०	३०	१ ३ ४ ६ २ ६ ९
१५	९ ८ ७	३१	२ १ ७ ८ ३ ० ९
१६	१ ५ ९ ७	३२	३ ५ २ ४ ५ ७ ८

मात्रिक प्रस्तारके क़ायदेमें थोड़ा फेर फ़ार करनेसे वर्णिक प्रस्तार का क़ायदा वनजाता है। अधिक कष्ट न होगा इसे भी समझ लीजिये।

वर्ण प्रस्तार रीति

जितने अक्षरोंका प्रस्तार करना है (वर्णोंका, मात्राओंका नहीं) उतने ही गुरु चिह्न लिख लो यही पहला रूप हुआ। इसमें से दूसरा रूप निकालनेके लिये आदि गुरुके नीचे लघु रेखा खींच दो इस लघु रेखाकी दाहिनी ओर प्रथम रूपका शेष भाग ज्यूंका त्यूं नक़ल करो, बाईं ओर गिनतीमें जितने अक्षरोंकी कमी हो सब गुरु (वक्ररेखा) लिख कर वर्ण संख्या समान करलो। जबतक सर्व लघु वाला रूप न आ जाय यही क्रिया करते चले जाओ। अन्तिम रूप तक जितने रूप बनें, समझ लो कि इतने वर्णोंसे इतने ही रूप (छन्द) बन सकते हैं।

उदाहरण

एक अक्षरका प्रस्तार		दो वर्णका प्रस्तार	
ऽ	पहला रूप	ऽ ऽ	पहला रूप
।	दूसरा रूप	। ऽ	दूसरा „
		ऽ ।	तीसरा „
		। ।	चौथा „

तीन वर्णका प्रस्तार

१	ऽ	ऽ	ऽ
२	।	ऽ	ऽ
३	ऽ	।	ऽ
४	।	।	ऽ
५	ऽ	ऽ	।
६	।	ऽ	।
७	ऽ	।	।
८	।	।	।

मगण, यगण आदि वर्णिके आठ गण इसी नियमसे बने हैं

चार वर्ण का प्रस्तार

१	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
२	।	ऽ	ऽ	ऽ
३	ऽ	।	ऽ	ऽ
४	।	।	ऽ	ऽ
५	ऽ	ऽ	।	ऽ
६	।	ऽ	।	ऽ
७	ऽ	।	।	ऽ
८	।	।	।	ऽ
९	ऽ	ऽ	ऽ	।
१०	।	ऽ	ऽ	।
११	ऽ	।	ऽ	।
१२	।	।	ऽ	।
१३	ऽ	ऽ	।	।
१४	।	ऽ	।	।
१५	ऽ	।	।	।
१६	।	।	।	।

यही क्रिया अधिक अक्षरों में जानो

उक्त चार प्रस्तारों की रूप संख्या पर ध्यान देनेसे आप एक अजीब नतीजे पर पहुंचेंगे वल्के क्रिया करके रूप निकालने में जितना विस्तार होताहै यह सब संक्षिप्त होकर कूज़ेमें दर्या (गागर में सागर) समा जायगा देखिये—

दूसरा क़ायदा

एक वर्ण का प्रस्तार दो है तो दो वर्ण का उससे दुगुना चार है। तीन वर्ण का—उससे दुगुना आठ है। चार वर्ण का—उससे दुगुना १६ है। पाँच वर्ण का—उससे दुगुना ३२ होगा। ६ वर्ण का दुगुना ६४ है। इसी तरह जहां तक जी चाहे द्विगुण करते जाइये अभीष्ट सिद्ध हो जायगा।

१—	१ × २	=	२
२—	२ × २	=	४
३—	४ × २	=	८
४—	८ × २	=	१६
५—	१६ × २	=	३२
६—	३२ × २	=	६४
७—	६४ × २	=	१२८
८—	१२८ × २	=	२५६
९—	२५६ × २	=	५१२
१०—	५१२ × २	=	१०२४
११—	१०२४ × २	=	२०४८

इसी तरह करते करते चाहें जिस अङ्कका वर्ण प्रस्तार निकाल सकते हैं। परन्तु सच पूछिये तो इस रस्ताइनमें भी एक आंचकी कसर है। जो खेड़ा लघु गुरु रेखा लिखनेमें था वही इसमें भी है। जब तक एकसे अमल शुरू न करो, इच्छानुसार अङ्क हाथ नहीं आता, इसलिये एक और क़ायदा सुनिये।

तीसरा क़ायदा

जितने वर्णोंका प्रस्तार संख्या जाननी हो उस अङ्कको आग

पर भाग दो (तक़सीम करो) ❀ भाग देने से लब्धि और जो कुछ शेष बचे † इन दोनों अङ्कों को नज़र में रक्खो। अङ्क १६ इस क़ायदे की जान है इसलिये १६ को वर्गमूल मानो ।

अर्थात् १६ को १६ गुणा करके, गुणनफलको फिर १६ गुणा करो, इसके गुणनफल को फिर १६ गुणाकरो,इसके गुणनफलको फिर १६ गुणा करो, तात्पर्य यह कि लब्धिका अङ्क १ है तो १६। २ हैं तो १६ का वर्ग २५६। ३ हैं तो—
१६ × १६ × १६=४०९६ इत्यादि ! अन्त में जो गुणनफल आवे उसको शेषाङ्क (जो भाग करने में बचा है) के रूपांकसे (जो तीन अङ्क कंठ किये हैं) गुणा करदो इष्ट संख्या निकल आयगी।

उदाहरण

१ का रूपांक २। २ का ४। ३ का ८
यह तीनों रूपांक तो कंठ होगये, अब चारका रूपांक निकालना है तो उक्त रीत्यनुसार

४ ÷ ४ = १ लब्धि। ० शेष।

लब्धिका अङ्क एक है तो १६ समझो और ० का रूपांक ०।

१६ × ० = ० शून्य का रूपांक कुछ नहीं है इसलिये क्रिया भी कुछ नहीं होगी, वही १६ चार वर्णोंका प्रस्तार जानिये।

५—वर्ण का रूपांक

५ ÷ ४ = १ लब्धि। १ शेष। १ का रूपांक २ कंठ है ही और एक लब्धि × १६ भी मालूम हो चुका है तो १६ × २ = ३२ यही पांच वर्ण के प्रस्तारका संख्यांक है

❀परन्तु १ से ३ तक जबानी याद रखने पडेंगे,अर्थात् १ वर्णका प्रस्तार २ २ का ४। ३ का ८। यह तीन अंक याद रखने का कारण यह है कि तीन को ४ पर तकसीम नहीं करसकते तो क्रिया भी नहीं हो सकती।

† हमेशा ३, २, १, ० इनमें से ही कोई अंक बचेगा।

६—वर्णका रूपांक

६ ÷ ४ = १ ल० । २ शेष । २ का रूपांक ४

१६×४ = ६४

७—वर्णका रूपांक

७ ÷ ४ = १ ल० । ३ शेष । ३ का रूपांक ८

१६×८ = १२८

८—वर्णका रूपांक

८ ÷ ४ = २ ल० । ० शेष

१६×१६ = २५६ ।

१५—वर्णका रूपांक

१५ ÷ ४ = ३ ल० । ३ शेष । ३ का रूपांक ८

१६ × १६× १६ = ४०९६ × ८ = ३२७६८

२६—वर्णका रूपांक

२६ ÷ ४ = ६ ल० । २ शेष । २का रूपांक ४

१६ × १६ × १६ × १६ × १६ × १६ = १६७७७२१६

१६७७७२१६ × ४ = ६७१०८८६४ इत्यादि ज्ञेयम्

गौरव गाथा

हिन्दी प्रेमियोंके लिये गौरवकी बात है कि उनका माननीय साहित्य सागर इतना अगाध, अपार है कि अन्य भाषाओंकी तरङ्ग मारनेवाली नदियां, इसकी लहरोंसे उड़े हुए छींटे मालूम होते हैं । भारतीय भाषामें उर्दू अधिक प्रचलित और विकास पूर्ण भाषा है उसमें भी :

मूल छन्द	१६
इनके भेद	३२०
नवीन	१७
रुबाई	२४

कुल ३८० छन्द हैं। इसके मुक़ाविले में हिन्दी को देखिये, लाखों की संख्या तो काग़ज़ पर मौजूद है, फिर भी असीम। उर्दू का कोई छन्द (वहर) ऐसा नहीं जो पिङ्गल में मौजूद न हो। आशा है कि भाषा-भक्त इन अंकों को देख कर हिन्दी का और भी अधिक आदर करेंगे।

प्रस्तार से एक वात और निकल आयी, मात्रिक प्रस्तार के किसी एक रूप में चारों चरण लिखें तो वह वर्णिकछन्द हो जायगा। परन्तु किसी चरणमें दूसरा रूप आ पड़ा तो मात्रिक ही रहेगा। इससे सिद्ध हुआ कि जितनी मात्राके जितने रूप वनते है इतने ही वर्णवृत्त वन सकेंगे, जैसे ५ मात्रामें ८ रूप वनते हैं तो ५ मात्रासे ८ ही वर्णवृत्त वनेंगे। प्रियम्वदा, नव मालिनी, मोदक आदि इसी प्रस्तारका अल्प चमत्कार है।

२ सूचा (दूसरा प्रत्यय)

प्रस्तारने वताया था कि इतनी मात्राओं अथवा वर्णों का एक चरण हो तो उतनी ही मात्राओं अथवा वर्णों के कितने रूप वन सकेंगे। सूची, प्रस्तारकी क्रियाको जांच लेगी कि शुद्ध है या अशुद्ध। जैसे गणितमें गुणाको अङ्क ६ के कांटेसे जांच लेते हैं

उसी प्रकार प्रस्तारका शुद्धाशुद्ध होना सूचीसे जांचा जाता है।

जब किसी संख्याके रूप निकालेंगे (चाहे वर्ण प्रस्तार हो या मात्रा प्रस्तार) तो उन रूपों की अधिकसे अधिक ८ शक्लें होंगी अर्थात् कुछ रूप तो ऐसे होंगे जिनके अन्तमें लघु होगा, कुछ ऐसे होंगे जिनके अन्तमें गुरु होगा, कुछकी आदिमें लघु, कुछकी आदिमें गुरु, इत्यादि निम्न लिखित आठ सूरतें होंगी। उन आठों सूरतोंका सूक्ष्म संकेत भी साथ ही लिखते हैं।

सूरत	सूक्ष्म संकेत
१—आदि लघु	लादि
२—अन्त लघु	लान्त
३—आदि गुरु	गादि
४—अन्त गुरु	गान्त
५—आदि और अन्त दोनों जगह लघु	लादिलान्त
६—आदि लघु और अन्तमें गुरु	लादिगान्त
७—आदि गुरु अन्त लघु	गादिलान्त
८—आदि और अन्त दोनों जगह गुरु	गादिगान्त

उक्त संकेत वर्ण सूची तथा मात्रा सूची दोनोंमें काम देंगे।

मात्रा सूची

जितनी मात्राकी सूची निकालनी हो उतने ही कोष्ठक इस प्रकार बना लीजिये—जैसे ५ मात्रा की सूचीके लिये

१	२	३	५	८

एक मात्रा का रूप एक ही होता है, २ के २, ३ के ३, ४के ५, ५के ८, इत्यादि, देखो पृष्ठ २७

बाईं ओरके पहले ख़ानेमें १, दूसरेमें २, तीसरेमें ३, चौथेमें५, पाँचवेंमें ८, छठेमें १३, सातवेंमें २१, आठवेंमें ३४ इसी तरह रूपाङ्क लिखते चले जाइये। यह कोष्ठककी पहली पंक्ति हुई। इसके ऊपर ऐसे ही पाँच ख़ानों की दूसरी पंक्ति दाहिनी ओरसे बाईं ओरको बना लो। याद रहे कि पहली पंक्ति में चाहे कितने ही ख़ाने हों परन्तु ऊपरकी पंक्तिमें ५ से अधिककी ज़रूरत नहीं है, हां ५ से कम हो सकेंगे। दूसरी पंक्तिमें दाहिनी ओर जो सिरेका ख़ाना है उसमें शब्द "रूपाङ्क" लिख दो। बाक़ी रहे चार ख़ाने, इनमें सूचीकी उक्त आठ शक्लें यूं भरी जाएंगी कि रूपांक वाले ख़ानेकी बाईं ओर (अर्थात् दाहिनी ओरसे दूसरेमें) दो सूरतें—१ लादि, २ लान्त। तीसरेमें तीन सूरतें—३ गादि, ४ गान्त, ५ लादिलान्त। चौथेमें दो शक्लें—६ लादिगान्त, ७ गादिलान्त। पांचवेंमें एक शक्ल—८ गादिगान्त।

पाँचों कोष्ठक भरते ही सूची तैयार हो गयी जिसका अर्थ यह हुआ कि दाहिनी ओर सिरेके ख़ानेमें रूपाँकके नीचे जो अङ्क है यह बताता है कि इतनी मात्राके इतने रूप होंगे। दूसरा कोष्ठक बताता है कि इन सब रूपोंमें आदि लघुवाले इतने रूप होंगे तथा इतने ही अन्त लघुवाले। तीसरा ख़ाना तीन शक्लोंकी गिनती बतायगा। इत्यादि

उदाहरण

दो मात्राकी सूची

१लादि । २लांत	रूपांक
१	२

१—ऽ
२—॥

६ मात्राकी सूची

	८गादिगांत	३लादिगांत ७गादिलांत ❀	३ गादि ४ गान्त ५लादिलांत	१ लादि २ लान्त	रूपांक
१	२	३	५	८	१३

इस नक्शेसे यह प्रकट होता है:—

क—दाहिनी ओर पहला खाना—इसमें १३ का अङ्क है तो मालूम हुआ कि ६ मात्रा के १३ रूप बनेंगे।

ख दूसरे खानेमें ८ है तो आठ रूप लादि होंगे और आठही लान्त

ग तीसरेमें ५ है तो गुरुसे आरम्भ ५ रूप
गुरु पर समाप्त ५ रूप और
५ रूप ऐसे होंगे जिनके आदि-अन्त दोनों स्थानोंमें लघुहोगा

घ -चौथेमें ३ हैं तो-आरम्भमें लघु-अन्तमें गुरु वाले ३ रूप
आरम्भमें गुरु-अन्तमें लघु " " "

❀ सूची छन्दकी श्रीभानुकविने अपने ग्रन्थ छन्दःप्रभाकरमें लिखा है परन्तु चौथा खाना खाली ही छोड़ दिया है इसलिये यह अपूर्ण है

ङ—पांचवेंमें २ है तो दो रूप ऐसे होंगे जिनके आदि-अन्त दोनों स्थानों में गुरु होगा।

(जांचनेके लिये देखो टगणके १३ भेद पृष्ठ ८)

दो मात्रासे ९ तकका सूची बिम्ब नीचे लिखते हैं

					गादि-गान्त,	लादि-गान्त, गादि-लान्त,	गादि, गान्त, लादि-लान्त,	लादि, लान्त,	रूपांक
दो मात्राकी सूची					०	०	०	१	२
तीन ,, ,,					०	०	१	२	३
चार ,, ,,					०	१	२	३	५
पांच ,, ,,					१	२	३	५	८
६ मात्रा०				१	२	३	५	८	१३
७ मात्रा०			१	२	३	५	८	१३	२१
८ मात्रा०		१	२	३	५	८	१३	२१	३४
९मात्रा०	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५

मात्रा सूचीका दूसरा क़ायदा

जितनी मात्राकी सूची निकालनी हो उस अङ्कमेंसे क्रमशः ०, १, २, ३, ४, कम करके जो कुछ बाक़ी बचता जाय उन को नज़रमें रक्खो या लिखते जाओ। शून्य कम करनेसे जो बाक़ी बचे उसका रूपांक, रूपांक है। १ कम करनेसे जो बचे, उसका रूपांक लादि लान्त जानों। २ कम करनेसे जो कुछ बचे, उसका रूपांक —गादि, गान्त, लादिलान्त है। ३ कम करनेसे जो कुछ बचे, उसका रूपांक—लादिगान्त, गादिलान्त है। ४ कम करनेसे जो बचे, उसका रूपांक—गादिगान्त होगा-जैसे

९ मात्रा की सूची चाहिये तोः—

९ − ०=९ शेषांक ९ का रूपांक ५५ तो ९ मात्रा का रूपांक ५५ ही होगा

९ − १=८ आठका रूपांक ३४ तो लादि तथा लान्त ३४ होंगे

९ − २=७ सातका रूपांक २१ तो गादि, गान्त, तथा लादिलान्त २१ हुए

९ − ३=६ छः का रूपांक १३ तो लादिगान्त तथा गादिलान्त १३ होंगे

९ − ४=५ पांचका रूपांक ८ तो गादिगान्त आठ होंगे

इन सूचियोंके अनुसार जांच करलेनी देखो। पृष्ठ ८, ९, १० तथा २४

वर्ण सूची

जितने वर्णों की सूची निकालनी हो उनके रूपांक (जो प्रस्तार प्रत्यय द्वारा जान चुके हो) का ध्यान करो जैसे १ का रूपांक २। २ का ४। ३ का ८। ४ का १६। ५ का ३२। ६ का ६४। (देखो पृष्ठ ३०) अब गिनो कि एकसे लेकर रूपाँक तक कितने ख़ानोंकी ज़ुरूरत होगी, जैसे ४ वर्णकी सूचीमें ४ का रूपांक १६ है तो १ से १६ तक रूपांक लिखने में १,२,४,८,१६ यह पांच ख़ाने चाहियें। ६ वर्णकी सूचीमें ६ का रूपांक ६४ है तो १,२,४,८,१६,३२,६४ यह सात ख़ाने हुए इसी हिसावसे आवश्यकतानुसार ख़ाने खींचलो इनमें वाईं ओर सिरेके ख़ानेमें अंक १, फिर दाहिनी ओरको दूसरेमें २, तीसरेमें ४, चौथेमें ८, पांचवें में १६ इत्यादि भरते चले जाओ। इनके ऊपर दूसरी पंक्तिमें दाहिनी ओरसे वाईं ओरको केवल तीन कोष्टक वनाओ। दाहिनी ओर वाले पहलेमें शब्द "रूपांक" लिखो, दूसरेमें सूचीकी आदिम चार सूरतें, तीसरेमें अन्तिम चार सूरतें लिखदो वस नतीजा निकल आया

१ वर्णकी सूची

लादि, लान्त, गादि, गान्त,	रूपांक	ऽ
१	२	।

२ वर्णकी सूची

लादिलांत, लादिगांत, गादिलांत, गादिगांत,	लादि, लांत, गादि, गांत,	रूपांक	
			SS
			IS
			SI
१	२	४	II

२ वर्णसे ९ वर्ण तकका सूची बिम्ब

								लादिलान्त लादिगांत गादिलांत गादिगांत	लादि लांत, गादि- गांत,	रूपांक
२ वर्ण								१	२	४
३ वर्ण०							१	२	४	८
४ वर्ण०						१	२	४	८	१६
५ वर्ण०					१	२	४	८	१६	३२
६ वर्ण०				१	२	४	८	१६	३२	६४
७ वर्ण०			१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
८ वर्ण०		१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
९ वर्ण०	१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२

पृ० २६ पर चार तक वर्ण प्रस्तार दिया हुआ है, जाँचने के लिये उसे देखिये, ५ से ६ तक प्रस्तार निकाल कर इसके साथ मिलाइये।

वर्ण सूचीका सारांश यह है कि मुख्य तीन ख़ाने भरने में दाहिनी ओर से पहला रूपांक है उसमें रूपांक लिखें, रूपांकका आधा बाईं ओर, उसका आधा उसके बाईं ओर, बस फ़ैसिला हुआ।

प्रत्यय यद्यपि ६ हैं परन्तु इनमेंसे ४ अत्यन्त प्रयोजनीय, बाक़ी गणित चमत्कार, या कौतुक मात्र हैं। चारमें दो लिख चुके, दो आगे समझा कर शेष छोड़ देंगे,

३ पाताल (तीसरा प्रत्यय)

मात्रिक छन्दके भेद, उसके रूप, उनमें कितने लघु गुरु होतेहैं? सम्पूर्ण मात्राएं कितनी होती हैं? कुल वर्ण कितने होते हैं? इत्यादि जाननेकी क्रियाको पाताल कहते हैं। यह अधिक लाभदायक नहीं है।

४ उद्दिष्ट (चौथा प्रत्यय)

मात्रिक उद्दिष्ट

यदि कोई प्रश्न करे कि अमुक रूप मात्रिक प्रस्तावमें कैवां है? इसका उत्तर—प्रस्तार क्रिया वग़ैर ही—उद्दिष्टसे निकल आता है।

रीति

दिये हुए रूपको लघु गुरु चिह्नोंमें (ज़रा विरल) लिख लो, आदि चिह्नके ऊपर अङ्क १ लिखो, यदि वह आदिम चिह्न गुरु है तो उस के नीचे अंक २, लघु है तो दूसरे पर अंक २ लिखलो। याद रक्खो कि गुरु रेखा पर ऊपर नीचे दोनों जगह क्रमशः रूपांक लिखे जायंगे और लघु रेखा पर केवल ऊपर ही। दाहिनी ओर अन्तिम अंकमें से, गुरु रेखाओंके ऊपर वाले अङ्कोंका योग घटा दो, जो शेष रहे वही उत्तर है। जैसेः—

१—उदाहरण—कोई प्रश्न करे कि "नमः शिवाय" ७ मात्राके प्रस्तारमें कौनसा रुप है ? तो उक्त रीत्यनुसार

१	२	५	८	२१
।	ऽ	।	ऽ	।
	३		१३	

अन्तिम अङ्क २१ मेंसे गुरु रेखाओंके ऊपरवाले अङ्कोंका योग (२+८=१०) घटाया तो २१-१०=११। मालूम हुआ ११ वां रूप है।

२—उदाहरण १३ मात्रा के प्रस्तारमें "पिङ्गल बिना छन्द नहीं" कौनसा रूप है ?

१	३	५	८	१३	३४	८९	१४४	२३३
ऽ	।	।	।	ऽ	ऽ	।	।	ऽ
२				२१	५५			३७७

१+१३+३४+२३३=२८१

३७७-२८१=९६ वाँ रूप है।

वर्णिक उद्दिष्ट

दिये हुए रूपकी हर रेखा पर बाईं ओरसे आरम्भ कर के १,२,४,८, १६ आदि वर्णिक रूपांक लिख दो, फिर लघु रेखाओंके अंकों को जोड़ कर उस में १ बढ़ादो उत्तर निकल आयेगा।

१—उदाहरण—"स्वतंत्रता" ४ वर्णके प्रस्तारमें कैवां रूप है ?

१	२	४	८
।	ऽ	।	ऽ

लघु रेखाओंके अंक १+४=५+१=६ ठा रूप है। (देखो पृ० २९)

२—उदाहरण—"गांधीजी कलत्रो आये" ९ वर्ण के प्रस्तारमें कैवाँ रूप है ०

१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
ऽ	ऽ	ऽ	।	।	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

लघु रेखाओंके अंक ८+१६=२४+१=२५ वाँ रूप है।

या

अन्तिम रेखावाले अंकको दुगना करके उसमेंसे गुरु रेखाओंके अंकोंका योग निकाल दें; उत्तर आ जायगा।

१+२+४+३२+६४+१२८+२५६=४८७

२५६×२=५१२−४८७=२५

उत्तर दोनों क्रियाओंसे एक ही आयगा।

५ नष्ट (पांचवां प्रत्यय)

उद्दिष्टमें रूपसे रूपांक निकलता है, इसमें रूपांकसे रूप। कोई प्रश्न करे कि ६ मात्राके प्रस्तारमें सातवां रूप क्या होगा? अर्थात् सातवें रूप में लघु गुरु का क्रम क्या होगा? तो इस रीति से निकालो।

मात्रिक नष्ट

जितनी मात्राके प्रस्तारमें प्रश्न हो उतनी ही लघु रेखायें लिख कर उनके ऊपर बाईं ओरसे आरम्भ करके १,२,३,५,८,१३ इत्यादि मात्रिक रूपांक लिख दो। फिर पूछे हुए भेदका अंक उक्त अन्तिमांक (दाहिनी ओरके पहले) मेंसे घटादो* जो शेष रहे उसमेंसे उपान्त्य (दाहिनी ओरसे बाईं ओर को दूसरा) घटा दो यदि उपान्त्य बड़ा होनेसे न घट सके तो उसे छोड़ कर तीसरेसे। घटाओ यह भी न घटे तो चौथे से, इसी तरह शेषमें से बाईं ओरके अंकोंको घटाते चले जाओ जिन जिन अङ्कोंमें से घट सका हो उनके नीचे वाली लघु रेखाको (पहली छोड़ कर) गुरु कर दो। इस गुरु रेखाके दाहिनी ओर वाली रेखाको मिटा दो, अर्थात् मानलो कि पिछले वाली रेखा ने आगला बढ़ बाईं ओर वाली रेखा को लेकर उसे लघु से गुरु किया है। इस परिवर्तन के नियम से दाहिनी ओर वाली सबसे

* यदि अन्तिम अंकसे पूछा हुआ अंक बड़ा होगा, तब नहीं हो सकता इस लिये उत्तर न होगा।

पहली रेखा कभी गुरु न हो सकेगी क्योंकि उसको वल देने वाली उसके दक्षिण पार्श्वमें कोई रेखा नहीं है, हाँ यह अपने वामपार्श्व वाली को कभी कभी गुरु वनाकर खुद मिट जायगी। जिन अंकोंमें से घट नहीं सका और वो अपने पड़ौसी को गुरु भी नहीं वना सके उनके नीचे ज्यूं की त्यूं लघु रेखा लिख लीजिये। किसी अङ्क पर पहुंच कर कुछ वाक़ी न रहे तो शेष रेखाओंको भी ज्यूंकी त्यूं लघु ही उतार लो, उत्तर तैयार हो गया।

१—उदाहरण—७ मात्रा के प्रस्तार में ११वां रूप क्या होगा ?

१	२	३	५	८	१३	२१
।	।	।	।	।	।	।
।	ऽ	०	।	ऽ	०	।

२१ मेंसे ११ घट सकता है ता २१ के नीचे गुरु रेखा लिखनी चाहिये परन्तु नहीं लिख सकते क्योंकि इसके दाहिनी ओर, वल देने वाली कोई रेखा नहीं, इस लिये २१के नीचे लघु रेखा लिखी गयी। २१-११=१०। १०में से १३ नहीं जा सकते तो १०-८= २। १३के नीचेवाली रेखा ने ८के नीचेवाली को गुरु किया और ख़ुद मिट गयी। २में से ५ या तीन नहीं घट सकते तो २-२=०। ५के नीचे वाली ज्यूंकी त्यूं लघु उतर आयी। ३ के नीचे वाली ने अपनी वलि दे कर २के नीचे वालीको गुरु किया। २ घटा कर कुछ नहीं वचा इस लिले वाक़ी १ के नीचे वाली रेखा लघु ही उतार ली, शून्य तो शून्य ही हैं इन्हें मिटा दिया तो रूप वना

। ऽ । ऽ । वही “नमः शिवाय”

२—उदाहरण— १२ मात्रा के २३३ रूप होते हैं (देखो पृ०२७) इन में ६६ वां रूप क्या होगा ?

१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	१४४	२३३	३७७
।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

।   । । ।   S   S   ।   ।   S

३७७−६६ = २८१−२३३ = ४८−३४ = १४−१३ = १−१ = ० रूप हुआ S । । । S S । । S यही "पिङ्गल बिना छन्द नहीं"

वर्णिक नष्ट

जितने वर्णों के प्रस्तारमें प्रश्न हो उतनी ही लघु रेखा खींचो उनपर बाईं ओर से एकादि वर्णिक रूपांक लिखो, फिर जितने वर्णके प्रस्तारमें का रूप जानना हो उतने वर्णों के रूपांक में से पूछी हुई संख्या घटाओ, जो बाकी बचे उस में से दाईं ओर की पहली रेखा पर लिखा हुआ अंक घटाओ। पहला न घटे तो दूसरा, दूसरा भी न घटे तो तीसरा चौथा इत्यादि घटाओ जिसमें से घट जाय उसीके नीचे गुरु चिह्न S लिख दो, फिर इसके शेष में से बाईं ओर वाले अङ्क क्रमशः घटाते जाओ, जिन जिन अङ्कों में से घटा हो, उनके नीचे गुरु रेखा लिख दो बाकी सब लघुके नीचे लघु उतार दो, रूप तय्यार है।

१—उदाहरण—४ वर्णके प्रस्तार में छठा रूप क्या होगा ?

१	२	४	८
।	।	।	।
।	S	।	S

४ वर्णके प्रस्तार में छटा रूप जानना है तो ४ का रूपांक १६ है १६-६ = १०-८ = २-२ = ०। उक्त चार अङ्कों में से केवल दा (८,२) घट सके हैं, इन्हीं के नीचे गुरु चिह्न लगाया, वाक़ी लघु रहे तो रूप वना— । S । S वही "स्वतंत्रता

२—उदाहरण—६ वर्णके प्रस्तार में २५वां रूप क्या है ?

१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
।	।	।	।	।	।	।	।	।
S	S	S	।	।	S	S	S	S

९ वर्णका रूपाँक ५१२ है (देखो पृ० ३०)

५१२-२५ = ४८७-२५६ = २३१-१२८ = १०३-६४ = ३६-३२= ७-४ = ३-२ = १-१ = ० ।

रूप वना S S S । । S S S S वही;

"गांधीजी कलकत्ते आये" ।

वाक़ी प्रत्योंका संक्षिप्त वर्णन—

६ मेरु❀

प्रस्तारमें सर्व गुरुके कितने रूप हैं ? फिर एक एक गुरु कम करते जायँ तो इस तरह कितने रूप होंगे ? इसी प्रकार लघुके रूपोंके जाननेका नाम "मेरु" है ।

७ खंडमेरु

मेरु वनाये वग़ैर ही जिससे मेरुका काम निकले उसे "खण्डमेरु" कहते हैं ।

❀ ६ से ६ तक प्रत्यय अधिक कामके नहीं हैं अतः इन्हें सविस्तार नहीं लिखा गया ।

८ पताका

गुरु और लघुके जितने जितने भेद मेरु द्वारा प्रकट होते हैं उनका स्थान नम्बर जतानेवाली क्रियाको "पताका" कहते हैं।

९ मर्कटी

मात्रिक प्रस्तारमें समस्त वर्ण, लघु, गुरु, समस्त मात्राएं जिससे प्रकाशित हों उसका नाम "मर्कटी" है।

प्रत्यय समाप्त।

पाठ ६

वर्णिक छन्द

संख्या	नाम	रूप	उदाहरण*	कैवां रूप है
	(उक्ता	एक वर्णका एक चरण, दो भेद)		
१	श्री	ऽ	[illegible]	१
२	लघु	।	[illegible]	२
	(अत्युक्ता—दो वर्णका एक चरण, चार भेद)			
३ A	काम	ऽऽ	रामा	१
४	मही	।ऽ	रमा	२
५ B	सार	ऽ।	राम	३
६	मधु	।।	रम	४

* उदाहरणके शब्दोंमें एक चरण का दिया है, ऐसे ही चारों चरण होनेसे एक छन्द बनेगा।

A काम, श्री आदि भी इसीके नाम हैं।

B सार, ... , मधु, ... और [illegible]

(मध्या—तीन अक्षरका एक चरण, ८ भेद)

७A	नारी	SSS	मां, नारी	६
८B	वलाका	ISS	वलाका	२
९C	मृगी	SIS	रा, मृगी	३
१०D	रमण	IIS	रमणी	४
११E	पंचाल	SSI	पंचाल	५
१२F	नरेन्द्र	ISI	नरेन्द्र	६
१३G	मंदर	SII	मंदर	७
१४H	कमल	III	कमल	८

(प्रतिष्ठा—४ वर्णका एक चरण १६ भेद)

(रूप देखो पृ० २९ प्रस्तार)

१५	कन्या, तीर्णा, तिन्ना	मा गा कन्या	१
१६	क्रीड़ा	य गे क्रीड़ा	२
१७	नन्द	नन्द रा गे	३
१८	दोला, रामा, भ्रमरी,	स ग दोला	४

A तालो, मालो, सीसा आदि भी इसीके नाम हैं

B शशि, वृत्ति आदि भी ,,

C प्रिया, विद्युत ,, ,,

D रमणी, रमुना, रजनी ,, ,,

E पाँचालि, कामावतार ,, ,,

F मृगेन्द्र, मृगेन्दु, नरेन्दु ,, ,,

G मन्दरि, मन्दरा ,, ,,

H कमलि, हरिणी ,, ,,

१९	धरा, विजया	ता गा धरा	५
२०	निर्मला, जया	ज गा जया	६
२१	चला, समुद्रो	भा ग चला	७
२२	सती, तरणीजा	न ग सती	८
२३	मुग्ध, गोपाल	मा ला मुग्ध	९
२४	धारि, कर्ण, मुद्रा	य ला धारि	१०
२५	धारि, धारा, धारिया	रा ल धारि	११
२६	फाग, धाग	स ल फाग	१२
२७	तावुरि, कृष्ण	ल्ले तावुरि	१३
२८	कन्तु, बुद्धि	ज ला कन्तु	१४
२९	निधि	भा ल निधि	१५
३०	पटु	न ल पटु	१६

(सुप्रतिष्ठा - ५ वर्ण का एक चरण, ३२ भेद)

३१	संमोहा	म, ग, ग,	[illegible] संमोहा	१
३२	हारी	य, ग, ग,	[illegible] हारी	२
३३	[illegible]	र, ग, ग,	[illegible]	३
३४	[illegible]	स, ग, ग,	[illegible]	४
३५	[illegible]	त, ग, ग,	[illegible]	५
३६	[illegible]	ज, ग, ग,	[illegible]	६
३७	[illegible]	भ, ग, ग,	[illegible]	७

[illegible]

३८	कलिल	न, ग, ग	कलिल प्यारा	८
३६	हासिका	म, ल, ग	देखो हासिका	६
४०	नरी	य, ल, ग	बनालो नरी	१०
४१	खंजा	र, ल, ग	खंज देखिये	११
४२	प्रिया	स, ल, ग	रचना प्रिया	१२
४३	कणिका	त, ल, ग	देखो कणिका	१३
४४	शिला	ज, ल, ग	अजीब शिला	१४
४५	मण्डल	भ, ल, ग	मण्डल रचो	१५
४६	करता	न, ल, ग	रच करता	१६
४७	कुम्भारि	म, ग. ल	मागले कुम्भारि	१७
४८	भ्रू	य, ग, ल	यगाले भ्रू हि	१८
४९	ह्री	र, ग, ल	राग ले ह्रीहि	१९
५०	पालि	स, ग, ल	सग ले पालि	२०
५१	किंजल्कि	त, ग, ल	किंजल्कि तागल	२१
५२	वार्द्धि	ज, ग, ल	जगाल वार्द्धि	२२
५३	विट	भ, ग, ल	है विट भागल	२३
५४	पांशु	न, ग, ल	न ग ल पांशु	२४
५५	मालिन	म, ल,ल	माले मालिन	२५
५६	वरीय	य, ल, ल	वरीये यल ल	२६
५७	कल्कि	र, ल, ल	कल्कि रेलल	२७
५८	जतु	स, ल, ल	सलिले जतु	२८
५९	छिद्रे	न, ल, ल	छिद्रे त ल ल	२९
६०	क्षुप	ज, ल, ल	जलाल क्षुप	३०
६१	पंच	भ, ल, ल	पंच भ ल ल	३१
६२	ह्लि	न, ल, ल	न ल ल ह्लि	३२

इसी प्रकार प्रस्तारानुसार ६,७,८,९ आदि अक्षरोंके छन्दोंको सबको सम्पूर्ण रूप से लिखें तो मानों कागज़ की एक किताब हो. इस लिये थोड़े थोड़े उदाहरण लिखते हैं।

(गायत्री—६ वर्णका एक चरण, ६४ भेद)

६३	तिलन्नोगा	स, स	सा सा तिलन्नोगा	१
६४	तिन्नुरिया	भ, म	तिन्नुरिया भा मे	७
६५	सोम राजी	य, य	य ये सोमराजी	१०
६६	तनुमध्या	त, य	ता ये तनुमध्या	१३
६७	शशि वदना	न, य	न य हो भरेज़ो । शशि वदना हो ।	१६
६८	कुसुमक	न, न	न न कुसुमक	६४

(उष्णिक—७ वर्णका एक चरण, १२८ भेद)

६९	शीर्षा	म, म, ग	मामामागेंधे शीर्षा	१
७०	[illegible]	म, र, ग	[illegible]	२७
७१	मदलेखा	म, स, ग	[illegible] मदलेखा	३९
७२	कुमारललिता	ज, स, ग	कुमारललिता आगी	४६
७३	हंसमाला	स, र, ग	[illegible] हंसमाला	५२
७४	[illegible]	स, स, स	[illegible]	१००
७५	[illegible]	न, न, स	[illegible]	१२८

(अनुष्टुप्—८ वर्णका एक चरण, २५६ भेद)

७६	विद्युन्माला	म,म,ग,ग	मामा गागे विद्युन्माला	१
७७	श्लोक*	म,र,ग,ग	मा रा गागा धरो श्लोके	१७
७८	कुलाधारी	य,र,ग,ग	यरीगीगे कुलाधारी	१८
७९	नाराचिका	त,र,ल,ग	नाराचिका तरालगे	८५
८०	प्रमाणिका	ज,र,ल,ग	जरालगे प्रमाणिका	८६
८१	गजगति	न,भ,ल,ग	नभलगो गजगती पशुपदे धर यती	१२०
८२	मल्लिका	र,ज,ग,ल	राजग्वाल बोलबोल मल्लिका सुगोल गोल†	१७१
८३	पञ्जरि	भ,म,ल,ल	भूमलला से पंजरि	१९९
८४	मन्थरि	म,य,ल,ल	मायालालसे मंथरि	२०१

---

* साधारण बोलचाल में जिस छन्द को अनुष्टुप कहते हैं वह आठ अक्षर का चरण होने से अनुष्टुप तो अवश्य है परन्तु श्लोक नहीं (यूं संस्कृतके हर छन्दको श्लोक कह देते हैं) श्लोकमें लघु गुरुका क्रम अटल है और उसमें अनिश्चित—

"पंचमं लघु सर्वत्र । सप्तमं द्विचतुर्थयोः
गुरु षष्ठन्तु पादानां । शेषास्त्वनियमाः स्मृताः" । इति

अर्थः— चारों चरणोंमें पाँचवाँ अक्षर लघु और छठा गुरु हो, दूसरे और चौथे चरण में सातवां लघु रहना चाहिये, बाकी के लिये कोई शर्त नहीं है, चारों चरण समान न होने से यह वर्णिक नहीं रहा, मात्राओं की गिनती समान न होने से मात्रिक भी नहीं, तो यही उचित है कि ऐसे नियम संकर छन्दोंको अलग लिखने की चेष्टा करें ।

† इसके चरणको दूना करनेसे उर्दू की बहर "हजज मुसम्मन सालिम" हो जाती है यह विस्तार पूर्वक आगे वर्णन करेंगे ।

८० [illegible] न,न,ल,ल न न ल ल गु [illegible] २५६

(बृहती—९ अक्षरका एक चरण, ५१२ भेद)

८६ [illegible] म,म,म मामामासे होगा [illegible] १

८७ भुजङ्ग सङ्गता स,ज,र सजरै भुजङ्ग सङ्गता १७२

८८ मणिमध्य भ,म,स हो मणिमध्या भामसके १८८

८९ [illegible] न,य,स [illegible] ४०८

९० [illegible] न,न,न [illegible] ५१२

(पंक्ति—१० अक्षरका एक चरण, १०२४ भेद)

९१ [illegible] म,म,म,ग मामामागा हो [illegible] १

९२ [illegible] भ,भ,भ,ग [illegible] ५५

९३ [illegible] भ,भ,भ,ग [illegible] ५८३

९४ [illegible] स,भ,न,ग [illegible] ५८७

९५ [illegible] न,न,न,न [illegible] १०२४

(त्रिष्टुप—११ अक्षरका एक चरण, २०४८ भेद)

९६ [illegible] म, म, म, ग, ग, १

[illegible]

९७ [illegible] भ, भ, भ, भ, ग, ८०

[illegible]

[illegible]

त, त, ज, ग, ग. ३५७

९८ इन्द्रवज्रा*

ता ता ज गा गे रच इन्द्रवज्रा

हो पांच छ: पे, विसराम नीका

ज, त, ज, ग, ग, ३५८

९९ उपेन्द्रवज्रा ❀

ज ता ज गा गे सु उपेन्द्र वज्रा

ह पांच छः पे विसराम नीका

पहलाचरण	दूसराचरण	तीसराचरण	चौथाचरण	नाम
१ उ० व०	इ० व०	इ० व०	इ० व०	कीर्ति
२ इ०	उ०	इ०	इ०	वाणी
३ उ०	उ०	इ०	इ०	माला
४ इ०	इ०	उ०	इ०	शाला
५ उ०	इ०	उ०	इ०	हंसी
६ इ०	उ०	उ०	इ०	माया
७ उ०	उ०	उ०	इ०	जाया
८ इ०	इ०	इ०	उ०	बाला
९ उ०	इ०	इ०	उ०	आर्द्रा
१० इ०	उ०	इ०	उ०	भद्रा
११ उ०	उ०	इ०	उ०	प्रेमा
१२ इ०	इ०	उ०	उ०	रामा
१३ उ०	इ०	उ०	उ०	ऋद्धि
१४ इ०	उ०	उ०	उ०	सिद्धि

❀ इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रामें केवल पहले वर्णका अन्तर है, इ० व० में पहला गुरु है तो उ० व० में पहला लघु। इन दोनोंके मिश्रण को कवियोंने शुद्ध माना है, मिश्रित रूपों के नाम अलग अलग रखदिये हैं जो १४ उपजातियोंके नामसे इसी पृ० पर दिये गये हैं

१०० स्वागता देखो मात्रिक छन्दोंमें चौपाई ४४३
१०१ अनुकूला " " " " ४८७
१०२ भुजङ्गी:— ५८६

क्रमाधीन भुजङ्गी यहां लिखते हैं परन्तु इसे समझने के लिये पृ०५७ अङ्क १०७में पहले "भुजङ्गप्रयात" देख लीजिये, फिर इसे पढ़िये।

भुजङ्गप्रयात में अन्त का गुरु अक्षर कम कर दीजिये भुजङ्गी बन जायगा। इसका रूप यह है ।SS ।SS ।SS ।S शेख़सादी की करीमा, फ़िरदोसीका शाहनामा इसी ध्वनिमेंहै

उदाहरण:—

जहां तीन 'यो' हों, "लगो" पास हो
भुजङ्गी अनोखा अनायास हो

('लगो' संक्षिप्त है लघु गुरु '। S' का)

इसी प्रकार चारों चरण हों चारोंके अन्तमें प्रास चाहिये।

१०३ अगरिम न, न, न, ल, ल, २०४८

सब लघु बनत अगरिम

(जगती—१२ अक्षरका एक चरण, ४०९६ भेद)

१०४ विद्याधारी म, म, म, म, १

मामामामा लाओ होगा विद्याधारी

१०५ मिथुन माली न, न, म, म, ६४

बनत मिथुन माली नाना मामे

१०६ विशालाम्भोजाली त, स, य, म, ६३

तासायम धरो विशालाम्भोजाली

१०७ भुजङ्गप्रयात:— ५८६

"यगण" । ऽ ऽ को आप जान ही चुके हैं चार यगण लिख दीजिये, एलो भुजङ्गप्रयातका एक चरण बन गया,चारों चरणोंके अन्त या उपांतमें प्रास अवश्य रहे। उदाहरण:—

जहां "यो" * लगातार हैं चार आते
उसे छन्द जानो भुजङ्ग-प्रयाते †
करो छन्द निर्माण खाते कमाने
बनाने लगोगे बनाते बनाते।

मौलाना "हाली" मरहूमका मुसद्दस इसी ध्वनिमें है अर्थात् ध्वनि यही है, छन्द कहीं भुजंगप्रयात है कहीं नहीं है। आपको आश्चर्य होगा कि यह क्या बात है जब एक ही बहर (छन्द) में सारा मुसद्दस है तो कहीं भुजङ्गप्रयात होना, कहीं न होना, क्या अर्थ रखता है ? मित्रो ! बात यह है कि वह उर्दू की बहरे "तक़ारुब" के क़ायदेमें लिखा है, बहर में

---

* "यगण" शब्दका गण तीनो लघु होनेसे नगण है और भुजङ्गप्रयात का रूप "।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ" है इन पर नजर डालिये, तीन लघु कहीं भी एकत्र नहीं हुए हैं इस लिये यगण शब्द इस छन्दमें नहीं आसकता इसीका संकेत "यो" लिखा गया है इसी तरह:—

† भुजङ्गप्रयात शब्दमें अन्तिम तीन अक्षर जगण रूप हैं, जरूरत है यगण की इसलिये 'प्रयात' के 'त' को गुरु कर लिया है क्योंकि यहाँ हम डबल बन्धनमें जकड़े हुएहैं न शब्द बदल सकते हैं न छन्द। यद्यपि प्राचीन कवियोंने कहीं कहीं लघुको गुरु गुरुको लघु बना लेना शुद्ध माना है तथापि हम अपने पाठकोंसे आग्रह पूर्वक कहते हैं यथा सम्भव इस छूटका पीछा न करें क्योंकि वास्तवमें यह एक प्रकारकी कमजोरीका चिह्न है।

दुरुस्त है, छन्द का नियम कुछ और है जिसे हम आगे चलकर मुक़ाबिले वाले प्रकरण में पूरी व्याख्या के साथ समझाएंगे, यहां केवल इतना बतादेते हैं कि भुजङ्गप्रयात के क़ायदे से लिखाहुआ छन्द बहरे तक़ारुब में अवश्यमेव शुद्ध होगा लेकिन तक़ारुब के क़ायदेसे लिखाहुआ कहीं शुद्ध और कहीं अशुद्ध।

हमारे एक (स्वर्गवासी) मित्रने धोका खाकर "तक़ारुब"के क़ायदेसे लिखेहुए छन्दोंका हेडिङ्ग "भुजङ्गप्रयात" दे दिया जो सब ग़लत थे समझानेपर उन्होंने मान लिया था।

१०८	बधिरा	स, भ, र, य	६९२
		बधिरा केवल साभराय जानो	
१०९	माया, गौरी	त, ज, ज, य,	८७७
		माया रचना तज जाय जमाके	
११०	परिलेख	ज, ज, ज,य,	८७८
		लिखाकर जाजजया परिलेखे	

जिन वृत्तोंमें केवल एक पहले अक्षर का ही अन्तर हो, बाक़ी लघु गुरु का क्रम समान हो तो उनके मिश्रण से १४ उपजाति बन जाती हैं, जैसे कि इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्राकी, देखो पृ०५५इसीप्रकार माया(नं०१०९)और परिलेख(नं०११०) की। धृष्टपद भ,भ ,ज, य और द्रुतपद न,भ, ज, यकी १४,१४ [illegible] वीका वही है जो पृ० ५५ पर लिखा है।

एक अक्षर के परिवर्त्तन को ही नहीं प्राचीन कवियोंने अक्षरकी कमी वेशी को भी उपेक्षित करके मिश्रण कर दिया है जैसे वंशस्थ के अक्षर वारह हैं और उपेन्द्रवज्रा के ग्यारह, इनका मिश्रण देखनेमें आता हैं यथा :—

नमोऽस्तु वाचस्पतये सचक्रिणे,	१२	वंशस्थ
स्वयंभुवे चापि हुताशनाय,	११	उपेन्द्रवज्रा
अनेन चोक्तं यदिदं ममाग्रतो,	१२	वंशस्थ
वनौकसां तच्च तथास्तु नान्यथा,	१२	वंशस्थ

(वाल्मी० रामायण—सुन्दर काण्ड)

इसके उपरान्त इन्द्रवंशा,उपेन्द्रवज्रा, और वंशस्थ इन तीनों का मिश्रण भी मिलता है —यथा

तावत्प्रविष्टा स्त्वसुरोदरान्तरं	१२	इन्द्रवंशा
परं न गीर्णा: शिशव: सवत्सा:	११	उपेन्द्रवज्रा
प्रतीक्षमाणेन वकारिवेशनं	१२	वंशस्थ
हतस्वकान्त स्मरणेन रक्षसा	१२	„

(भागवत स्कन्ध १० पूर्वार्द्ध अध्याय १२ श्लोक २६)

इन्द्रवज्रा, इन्द्रवंशा, उपेंद्रवज्रा और वंशस्थ, इन चारोंका भी मिश्रण अशुद्ध नहीं है

विद्या प्रबोधोदय जन्म भूमि—	११	इन्द्रवज्रा
वाराणसी ब्रह्मपुरी दुरत्यया	१२	इन्द्रवंशा
अत: कुलोच्छेद विधिं विधित्सु	११	उपेन्द्रवज्रा
र्निवस्तुमत्रेच्छति नित्यमेव स:	१२	वंशस्थ

(प्रबोध चन्द्रोदय नाटक अङ्क २ श्लोक १२)

वृत्तरत्नाकरकी नारायणभट्टी टीका इस मतके विरुद्ध है। हमारा मन्तव्य यह है कि इस विषयमें संस्कृतवालोंकी स्वतन्त्रताका अवलम्बन हमें हिन्दीमें नहीं करना चाहिये, चारों चरण एक ही वृत्तमें लिखे जाएं यही उचित है।

१११ कुसुमविचित्रा ६७६

देखो मात्रिक छन्दोंमें चौपाई

११२ स्रग्विणी र, र, र, र, ११७१

स्रग्विणी छन्दमें चार रा धारिये

११३ इन्द्रवंशा त, त, ज, र, १३८२

हो इन्द्रवंशा, रख ध्यान बात पे
ता ता ज रा में, यति पाँच सात पे

११४ वंशस्थ ज, त, ज, र १३८२

सुवृत्त वंशस्थ ज ता ज रा धरो

११५ तोटक स, स, स, स, ७५६

धर चारहु सागण तोटकमें

११६ सारङ्ग त, त, त, त, २३४१

सारङ्ग हो छन्द ता ता त ता धार

११७ मोतीदाम ज, ज, ज, ज, २६२६

धरो तुम चार 'ज' मौक्तिक दाम

११८ मोदक भ, भ, भ, भ, ३५११

देखो मात्रिक छन्दोंमें चौपाई

(अतिजगती– १३ वर्ण का एक चरण, ८१९२ भेद)

११९ कलहंस स, ज, स, स, ग, १७७२

कलहंस मांहि स स सा स ग आवे

१२० करपल्लवोद्गता य, य, स, ज, ग, २७६२

य या सा ज गा हो कर पल्लवोद्गता

१२१ मंजुभाषिणी स, ज, स, ज, ग, २७९६

स ज सा ज गे, बनत मंजुभाषिणी

(शक्करी—१४ वर्ण का एक चरण, १६३८४ भेद)

१२२ वसन्ततिलका त, भ, ज, ज, ग, ग, २९३३

होगा वसन्ततिलका त भ जा ज गा गे

१२३ प्रहरणकलिका न, न, भ, न, ल, ग, ८१२८

देखो मात्रिक छन्दोंमें चौपाई

(अति शक्करी-१५ वर्ण प्रति चरण, ३२७६८ भेद)

१२४ वाणीभूषा (८, ७ पर यति) म, म, त, न, म, ३८४२

वाणीभूषा अष्टे सप्ते ममतनमा से हो

१२५ मालिनी (८, ७ पर यति) न, न, म, य, य, ४६७२

ननमयय रखिये, मालिनी शुद्ध होगी

(अष्टि—१६ वर्ण प्रति चरण, ६५५३६ भेद)

१२६ नाराच ज, र, ज, र, ज, ग, २१८४६

लगो लगो लगो लगो नराच मांहि धारिये

(अत्यष्टि—१७ वर्ण-१३१०७२ भेद)

१२७ मन्दाक्रान्ता म, भ, न, त, त, ग, ग, १८९२९.

बीचमें या अन्तमें आता हो तब आरंभ कीजिये क्यूंकि चारों चरणोंमें उसी अक्षरका प्रयोग होगा जो पहले चरणमें दूसरा आ पड़ेगा।

जैसे

अङ्कादूत क्षितिजमङ्का ऽ नभिज्ञ शशि शङ्का करा ऽऽ स्य सुशमं,-
। । ।

टङ्कारिचापमनुलङ्का ऽऽ शरक्षतज पङ्का ऽ वरूषित शरम्।
। । ।

त्वङ्कामदं विहित रङ्का ऽ वनं दनुज कङ्कालनोदिन मना—
। । ।

तङ्काय वत्स भज तङ्काल मेघरुग हङ्कार हारि वपुषम्।
। । ।

(विकृति—२३ वर्ण, ८३८८६०८ भेद)

१३८ मत्तगयन्द (सवैया) ७ भ + २ ग १७६७५५६

द्वादश रुद्र करो यति 'भा' ऋषि, दो गुरुसे रच मत्तगयन्दा

१३९ सुमुखी (सवैया) ७ जगण + लग ३५६५११८

'ज' सात लगो पदमें जिहिके तिहिको सुमुखी अस नाम कहो

१४० चकोर (सवैया) ७ भगण + गल ५६६१८६३

भासत ग्वाल चकोरवने तज छन्द रंचो हितकारक छन्द

(संस्कृति—२४ वर्ण १६७७७२१६ भेद)

१४१ महाभुजङ्ग भुजङ्गप्रयातका दूना २३६६७४६

देखो पृ० ५७

१४२ गङ्गोदक स्रग्विणी का दूना ४७६३४६१

देखो छन्द नं० ११२ पृ० ६०

१४३ अरसात ७ भ + र ४९६१८६३

रा गणसे पहले तुम हे कवि भागण सात धरो अरसातमें

१४४ दुमिला (सवैया) तोटकका दुचन्द ७१६०२३६

देखो छन्द नम्बर ११५ पृ. ६०

१४५ मुक्तहरा (सवैया) ८ जगण ११६८३७२६

'ज' आठ विचार धरो पदमें यह मुक्तहरा शुभ छन्द सुजान

१४६ किरीट (सवैया) ८ भगण १४३८०४७१

'भा'अठका यदि हो पद तो सुकिरीटहि छन्द कहें कवि ता कँह

(अतिकृति-२५ वर्ण, ३३५५४४३२)

१४७ रसिक रसाला नन+सस+भतन+सग ८२८३६०४

नन पर सस धर भातन लाकर सग पादेश्च रसिक रसाला

१४८ अरविन्द मुखो ८ स+ल २३९६७४५२

१२, १३ यति

अरविन्द मुखो वसु सा रखिये, फिर ला रखिये रवि यक्ष विराम

(उत्कृति—२६ वर्ण, ६७१०८८६४ भेद)

१४९ कुम्भक २न+६र+गल ३८३४७९६८

चरण चरण कुम्भके दो नगा छः रगा अंतमें राखिये गाल निःशंक

१५० वशम्वद ८ स+२ ल ५७५२१८८४

१२, १४ यति

रखिये यति सूरज रल पदे, रचिये वसु सा ललपाद वशम्वद ।

पाठ ७

मात्रिक छन्द

एक मात्रासे ६ मात्रा तकके छन्दोंमें विषयका समावेश भली भांति नहीं होसकता इसलिये ७ मात्रासे आरम्भ करते हैं, कितनी मात्राओंके कितने रूप होते हैं ? यह प्रस्तारमें पृ० २७ पर समझा चुके हैं

(लौकिक—७ मात्राओंके छन्द)

१ सुगति — मुनिकल सुगति । हो मधुर अति

(वासव ८ मात्रा)

२ छवि — वसु छवि सुधारि । अन्तिम मुरारि

(आङ्क—९ मात्रा)

३ गङ्ग — रच गंग भाई । नव कल लगाई

(दैशिक—१० मात्रा)

४ दीप — दीप दश कल धार । गुण वसू पर तार (ताल)

(रौद्र ११ मात्रा)

५ अहीर — हर कल वनत अहीर । अन्त जगग कवि वीर

(आदित्य १२ मात्रा)

६ तोमर — रचि मत्त अन्तिम नन्द । यूं वनत तोमर छन्द

७ मृदुगति — रचि कला धरो सुधार । शर मुनी यती विचार

(भागवत १३ मात्रा)

८ उल्लाला

उल्लाला मलमास कल। वसु शर पर यति धर विमल

(मानव—१४ मात्रा)

९ कज्जल

कज्जलमें कल रत्न डारि। अन्त शब्द धरिये मुरारि

१० सखी

रच सखी भुवन कल दैके। वसु राग यती कर्णान्तै

११ विजात

सुविजातछन्द यों कीजै। यति पाँच पांच चतु दीजै

१२ मनोरम

मनोरम रचिये सदाई। यति पाँच चतु शर लगाई

१३ हालक

कलरत्न हालकमें धरो। नव पाँच यति ध्वज अन्तहो

१४ सुलक्षण विद्या मत्त, मुनि मुनि गत्त।
यति पर नन्द, सुलछन छन्द॥

१५ मनमोहन रच छन्द मन मोहन भलय
चतुर्दश कल अन्तिम वलय (॥।)

(तैथिक १५ मात्रा)

१६ चौवोला चौवोला तिथि कलसे करो
वसु मुनि यति ध्वज अन्तिम धरो

१७ चोपई तिथि कल अंत चौपई ग्वाल
शशि,शर,नव, झख ऊपर ताल

१८ गोपाल — तिथि कल दिशा वाण, विश्राम
हो गोपाल छन्द, का नाम
(संस्कारी—१६ मात्रा)

१६ पद्धरि — पद्धरि कल षोड़स देहु डार
लघु गुरू लघू(।ऽ।) तुक अन्त धार

२० चौपाई:——

गोस्वामी तुलसीदासकी रामायण (हिन्दुओंके) घर घरमें बड़े आदरसे पढ़ी जातीहै उसमें "दोहा" "चौपाई"का आधिक्य होनेसे यह दोनों छन्द सबके लिये सरलसे होगये हैं परन्तु इनके नियमोंको थोड़ेही आदमी जानते हैं हमने अभी एक नाटक छपा हुआ देखा है जिसमें कविने दोहे भी लिखे हैं जिनमें शायद ही कोई शुद्ध होगा। समयानुसार इन दोनों सुगम छन्दोंको हम विस्तृत रूपसे लिखना उचित समझतेहैं:—

चौपाई बड़ा विशाल छन्द है। बीसियों छन्द इसकी ध्वनि धारण किये हुएहैं फिर मज़ा यह कि मात्रिक और वर्णिक दोनों में इसका राज्य है। यद्यपि अपने अपने लक्षणोंसे नाम सबके अलग अलग हैं तथापि ध्वनि इसीको प्रतीत होतीहै।

यह समकलात्मक १६ मात्राका छन्द है। "रूप चौपाई" और "पादाकुल" भी इसीका नाम है। मात्रिक छन्दोंकी ध्वनि वक्ता और श्रोता आमने सामने बैठकर जल्द सिद्ध कर सकते हैं, काग़ज़ी घोड़े दौड़ानेमें असाध्य ता नहीं दुःसाध्य अवश्य है इसके कुछ नियम याद कर लीजिये।

१—चौपाईके प्रत्येक चरणमें १६ मात्राएं होती हैं

२—पादान्त अकेला लघु नहीं आ सकता, एकसे अधिक हों तो हानि नहीं

३—इसमें केवल द्विकल और त्रिकल (ढगण, णगण) ही का प्रयोग होता है।

४—डगणके पाँच रूपोंको आप जान ही चुके हैं (देखो पृ० १०) इनमें पयोध या मुरारि (जगण । ऽ । रूप जो) तीसरा रूप है, इसे छोड़ कर शेष चारों और णगणके दोनों रूप, इन छओंको त्रिकलके बाद न आने दो। हां दो त्रिकलके पश्चात् लानेमें हानि नहीं। दूसरे शब्दोंमें इस नियमका यह अभिप्राय है कि विषमके बाद सम पड़नेसे लय विगड़ जाती है परन्तु दो विषम मिलनेसे समता आ जाती है ३+३=६ तो दोष दूर होजाता है

क—विषम=अयुग्म,ताक़, जो दोपर पूरा न बटसके—त्रिकल

ख—सम=युग्म, जुफ्त, जो दो पर पूरा बट सके—द्विकल

शंका—नियमकी आज्ञा है कि विषमके बाद सम न आना चाहिये। चार मात्रा वाला शब्द दो द्विकलका मजमूआ है जो निम्न चौपाइयोंमें त्रिकलके पश्चात् आया है:—

हृदय "विचारि" शंभु प्रभुताई
पितहि "प्रमोद" चरित सुन जासू
भरत "विलोक" लोक विकलाई

इनकी ध्वनि क्यों नहीं बिगड़ी? विचारि, प्रमोद, विलोक, ने

त्रिकलके बाद स्थान पाकर चौथे नियमका खण्डन कर दिया ?'

स०—नियमका खण्डन नहीं, मण्डन हुआ है, ध्यानसे देखिये। डगणके चार रूप (कर्ण ऽ ऽ, करतल ॥ ऽ, वसुचरण ऽ ॥, विप्र ॥॥) वर्जित हैं। मुरारि वर्जित नहीं है विचारि आदि तीनों मुरारि हैं

शं०—मुरारिमें क्या सुर्खावका पर लगा है कि त्रिकल न होकर भी आ सका ?

स०—इसमें विशेषता: यह है कि अन्य चारोंकी तरह यह दो द्विकल वाला नहीं है

शं०—यह भी अन्य चारोंकी तरह चार मात्रा वाला है तो दो द्विकल वाला क्यों नहीं है ?

स०—अन्य चारों ऐसे हैं कि यदि उनके दो टुकड़े किये जाएं तो बराबरके दो टुकड़े होसकते हैं क्योंकि वो चारों २+२=४ हैं परन्तु विलोक आदिके दो टुकड़े बराबर नहीं हो सकते क्योंकि यह १+२+१=४ हैं। इससे सिद्ध हुआ कि यह रूप दोद्विकलका मजमूआ (योग) नहीं है इसी हेतुसे त्रिकलके बाद आनेका अधिकारी है।

५—जो लोग संगीत विद्यासे परिचित हैं—उनमें भी विशेष तालाध्यायसे—उनके लिये यह पांचवां नियम पूरा पथ दर्शक हो सकेगा। जिस तरह "तिताले" की १६ मात्रा होती हैं इसी तरह इसकी भी हैं। तितालेमें १, ५, ९, १३ वीं मात्रा पर ताल है चौपाईमें भी १, ५, ९, १३ वीं पर ताल है। तालका

अर्थ है—हाथ पर हाथ मारनेका काल, एक चुटकीसे दूसरी चुटकी तकका समय, ज़र्ब Stroke इत्यादि

६—द्विकल और त्रिकलके अनुसार चोपाईको निम्न लिखित रूपोंमें लिख सकते हैं।

२ + २ + २ + २ + २ + २ + २ + २
क—इहि विधि वी ते वा सर चा री

२ + २ + ३ + ३ + २ + २ + २
ख—सुर सरि मिले सुधा वन जै से

३ + ३ + २ + २ + २ + २ + २
ग—शंभु सहज सम रथ भग वा ना

२ + २ + २ + २ + ३ + ३ + २
घ— जो घर वर कुल होय अनू पा

३ + ३ + २ + ३ + ३ + २
ङ—करहु जाय तप शैल कुमा री

३ + ३ + ३ + ३ + २ + २
च—हृदय विचा रिशं भुप्रभु ता ई

हमारी निरंकुशता

मात्रिक चौपाईमें कहीं कहीं लघु गुरुका स्थान नियत करके जो पिङ्गल कारोंने अनेक नाम बना लिये हैं उनमें व्यर्थ बाधा (तूल फुजूल) के अतिरिक्त और कुछ तत्व नहीं हैं। सामान्य ज्ञान हो जानेके लिये जहां तक हमको याद हैं उनके नाम, रूप इसी प्रकरणमें लिख देतेहैं। एक नज़र डाल लीजिये।

१—मात्रा समक—१६ मात्रा, अन्त गुरु। फ़रमाइये चौपाईसे इस में क्या विशेषता है ? हां रणपिङ्गलकारने एक शर्त लगायी है कि सम मात्रा उसके पीछेकी मात्रासे न मिले, बस। ध्वनिमें कोई अन्तर नहीं इसके चार भेद हैं।

क—मत्त समक-उपरोक्त कुल नियम व दस्तूर। ६वीं मात्रा लघुरहे। सुनहु नाथ कहि मुदित विदेहू।

ख—विश्लोक– पाँचवीं और आठवीं मात्रा लघु।

परवश सखिन लखी जब सीता।

ग—चित्रा-५, ८, ६ वीं मात्रा लघु।

जनक वचन सुन सब नर नारी

घ—वानवासिका—६, १२वीं मात्रा लघु।

बोलत वचन झरत जनु फूला।

६ वीं लघु=मत्त समक। ५, ८ लघु विश्लोक। दोनोंका मजमूआ चित्रा। ६, १२ लघु वानवासिका। ६, ७ को लघु रखकर हम कुछ नाम रखलें, २, ३ का लघु कह कर आप कुछ नाम रख लीजिये। परन्तु लाभ ? कुछ नहीं

२—अरिल्ल-१६ मात्रा, अन्तमें दो लघु या दो गुरु। जगण रूप शब्द न आने पाय।

चहुं दिश चितै पूछ मालीगन।

गिरजा पूजन जननि पठाई।

३—डिल्ला-१६ मात्रा, अन्त भगण ऽ।।

सब सिय राम प्रेमकी मूरति

४—उपचित्रा–आठ मात्राके बाद एक गुरु। अन्त गुरु

रूप राशि पति प्रेम पुनीता

५—पज्झटिका--सर्वांश उपचित्राके समान। अन्तर केवल यही है कि इसमें जगणका निषेध है उसमें नहीं।

रूप राशि पति प्रेम पुनीता

वर्णिक चौपाई

६—१–चम्पक माला–S ॥ +SSS + ॥ S + S

भा म स गा है चम्पकमाला

चंपामाला, रुक्मावती, रुक्मावती रूपवती, सौभाग्यवती, पंचकमाला भी इसीके नाम हैं

७—२–दोधक—S॥ + S॥ + S॥ + SS

तीनहु भा पर दो गुरु होई
दोधक छन्द भयो शुभ सोई

८—३–स्वागता—SIS, |||, S||, SS र, न, भ, ग, ग

स्वागता हि रच रा न भ गा गे। शुद्ध रूप अति सुन्दर लागे
छन्द शुद्ध तव हो कवि तेरा। ज्ञान होय गुण दोषन केरा।

९—४—मोदक A—S | | + S | | + S | | + S | |, भ,भ,भ, भ

भागन चार विचार धरो तुम
याविधि मोदक पाद करो तुम

A एक पिङ्गलकार इसका रूप—४ भगण+म+स+ल लिखते हैं

१०—५—नव मालिनी A—। । ।+। ऽ ।+ऽ । ।+। ऽ ऽ

न, ज, भ, य   ८, ४ पर यति

न, ज, भ, य, आठ चार+विसरामा

तब "नव मालिनी" हि+धर नामा

११—६—प्रहरणकलिकाB—। । ।+। । ।+ऽ । ।+। । ।+ल ग

न, न, भ, न, ल, ग,   ७,७, पर यति

न, न, भ, न, ल, ग, से+प्रहरण कलिका

हरि सुमिरत नासत अघ कलिका

१२—७ अनुकूला C—ऽ । ।+ऽ ऽ ।+। । ।+ऽ ऽ

भ, त, न, ग, ग,

भा त न गा गे रच अनुकूला

होत सदा या विन पद लूला

१३—८—विद्युन्माला—ऽ ऽ ऽ+ऽ ऽ ऽ+ऽ ऽ म, म, ग, ग,

दो मागाना दो गो लीजे। विद्युन्माला को यों कीजे

आठों गोसे विद्युन्माला। होगा जैसे सांचे ढाला

१४—९—तामरस—। । ।+। ऽ ।+। ऽ ।+। ऽ ऽ न, ज, ज, य

नगन जगान जगान यगा से

प्रतिपद तामरसाकृति भासे

A नव मालिका, नव मालती भी इसीके नाम हैं

B प्राकृत पिङ्गलसूत्र, मंदार मरन्द चम्पू, वाग्वल्लभमें यति नहीं कही पिं० छन्दः सूत्र—हलायुधीटीकामें७+७ पर यति और प्रहरण कलिता नामहै

C सान्द्रपदा भी इसीका नाम है। यदि ५, ६ वर्णा पर यति करलें तो मौक्तिकमाला भी यही हो जाता है।

१५—१०—कुसुम विचित्रा—। । । + । ऽ ऽ + । । । + । ऽ ऽ,
न, य, न, य

नगन यगाना नगन यगाना
कुसुम विचित्रा सुगम बनाना

१६—११—मालती—। । । + । ऽ । + । ऽ । + ऽ । ऽ, न,ज,ज, र,.

न ज ज र से रच छन्द मालती
मधुर ध्वनी गतिहै निकालती

(महा संस्कारी १७ मात्रा)

२१ राम — नव वसु यतीसे, राम बनाओ
जगण शब्द कभी अन्त न लाओ

(पौराणिक १८ मात्रा)

२२ राजीवगण — राजीवगण रच नव नव कल किये
सदैव रख ध्यान शुभ गतिके लिये

२३ शक्ति — अठारह कलासे सुशक्ती करो
लघू चन्द्र, रस, हर,कला कल धरो

(महा पौराणिक १९ मात्रा)

२४ पीयूषवर्ष — पीयूषवर्ष रच, दस नव यति किये
यह छन्द होत है, उन्नीस कल दिये

२५ सुमेरु — रवी अरु वार पे यति, डारि दीजै
सुमेरु छन्द को इसी भांति कीजै

२६ नरहरि — मनु बाण चाप दै अन्तै, नरहरी
गतिका प्रवाह हो जैसे सुरसरी

१०—५—नव मालिनी A—। । । + । S । + S । । + । S S
न, ज, भ, य ८, ४ पर यति

न, ज, भ, य, आठ चार+विसरामा
तब "नव मालिनी" हि+धर नामा

११—६—प्रहरणकलिकाB—। । ।+। । । + S । । + । । । +ल ग
न, न, भ, न, ल, ग, ७,७, पर यति

न, न, भ, न, ल, ग, से+प्रहरण कलिका
हरि सुमिरत नासत अघ कलिका

१२—७ अनुकूला C—S । । + S S । + । । । + S S
भ, त, न, ग, ग,

भा त न गा गे रच अनुकूला
होत सदा या विन पद लूला

१३—८—विद्युन्माला—S S S+S S S + S S म, म, ग, ग,

दो मागाना दो गो लीजे। विद्युन्माला को यों कीजे
आठों गोसे विद्युन्माला। होगा जैसे सांचे ढाला

१४—६—तामरस—। । । + । S । + । S । + । S S न, ज, ज, य

नगन जगान जगान यगा से
प्रतिपद तामरसाकृति भासे

A नव मालिका, नव मालती भी इसीके नाम हैं

B प्राकृत पिङ्गलसूत्र, मंदार मरन्द चम्पू, वाग्वल्लभमें यति नहीं कही पिं० छन्दः सूत्र—हलायुधीटीकामें७+७ पर यति और प्रहरण कलिता नामहै

C सान्द्रपदा भी इसीका नाम है। यदि ५, ६ वर्णों पर यति करलें तो मौक्तिकमाला भी यही हो जाता है।

१५—१०—कुसुम विचित्रा—। । । + । ऽ ऽ + । । । + । ऽ ऽ,
न, य, न, य

नगन यगाना नगन यगाना
कुसुम विचित्रा सुगम बनाना

१६—११—मालती—। । । + । ऽ । + । ऽ । + ऽ । ऽ, न,ज,ज, र,

न ज ज र से रच छन्द मालती
मधुर ध्वनी गतिहै निकालती

(महा संस्कारी १७ मात्रा)

२१ राम — नव वसु यतीसे, राम बनाओ
जगण शब्द कभी अन्त न लाओ

(पौराणिक १८ मात्रा)

२२ राजीवगण — राजीवगण रच नव नव कल किये
सदैव रख ध्यान शुभ गतिके लिये

२३ शक्ति — अठारह कलासे सुशक्ती करो
लघू चन्द्र, रस, हर,कला कल धरो

(महा पौराणिक १६ मात्रा)

२४ पीयूषवर्ष — पीयूषवर्ष रच, दस नव यति किये
यह छन्द होत है, उन्नीस कल दिये

२५ सुमेरु — रवी अरु वार पे यति, डारि दीजै
सुमेरु छन्द को इसी भांति कीजै

२६ नरहरि — मनु वाण चाप दै अन्तै, नरहरी
गतिका प्रवाह हो जैसे सुरसरी

२७ दिण्डी — अंक दश पै यति, करहि रचो दिण्डी
नियम यदि पालहि, बनत शुद्ध पिण्डी

(महादैशिक २० मात्रा)

२८ योग — रवि वसु यति कर लीजे, योग बनाई
यह गुणि जन कवियोंने, रीति बताई

२६ हंसगति — हंस गती हो सहज, रुद्र निधि धरिये
साधु साधु हों शब्द, भरती न भरिये

(त्रैलोक—२१ मात्रा)

३० प्लवङ्गम — गादि प्लवङ्गम, वसु मलमास यति धरिये
न्यूनाधिक कल अरु यति भंग नहिं करिये

३१ चान्द्रायण — चान्द्रायण विश्राम, हर दिशा कीजिये
नियमकाछन्द मांहि, नित ध्यान दीजिये

३२ सन्त — यती, गंगा अरु, रस रस धरि, सन्त रचो
छन्द, उत्तम हो, दूषणसे सदा बचो

(महा रौद्र–२२ मात्रा)

३३ रास — वसु वसु धरिये, पुनि रस करिये, रास रचो
गलत गलत है, चाहे जगमें, धूम मचो

३४ राधिका — धरि तेरह कल पर अंक, राधिका रचिये
बस जब तक पार बसाय, दोषसे बचिये

३५ बिहारी — वसु राग वसु, डार यतो, छन्द बिहारो
गति याद करो, कविता हो, शुद्ध तिहारी

३६ कुण्डल — कुंडलको द्वादश दश, मत्तसे बनाओ

निर्भय छन्द रचो अरु, आनन्द मनाओ

(रौद्रार्क—२३ मात्रा)

३७ उपमान उपमान तेरह दस यति, डार ताहि कीजै
पूरी तेइस कला हैं, खूब जांच लीजे

३८ हीर राग राग, रुद्र यतो, अन्त लगो हीरमें
शुद्ध गती, ज्योति करत, हीरके शरीरमें

(अवतारी—२४ मात्रा)

३९ रोला रोला शिव मलमास, यती धरि कोजे भाई
कवियोंने यह रीति, सुगम इसकी वतलाई

४० रूपमाला रूपमाला छन्दमें यति मनु दिशा तुक नन्द
नियमके अनुसार लिखिये हो मनोहर छन्द

४१ शोभन यती मनु दश छन्द शोभन, धरो अन्त मुरारि
इसी विधिसे धरत बुधजन, चारु चरन सुधारि

४२ लीला लीला यती त्रैवार मुनि, पुनि गुण अन्त, "स"हो
इसका नियम, वस है यही या विधि छन्द, कहो

४३ दोहा यह छन्द इतना ग़रीव और सीधा सादा है कि अनपढ़ पुरुषोंके क़ाबूमें भी आजाता है, इसकी ध्वनि भी जगद्विख्यात है।

दोहा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है इसका पहला और तीसरा चरण १३ मात्राका, दूसरा और चौथा ११ मात्राका होता है। इन्हीं दोनों में 'प्रास' रहता है इस प्रासका नाम "समान्त्य" है।(देखो "प्रासपुञ्ज" पृ० २)

दोहा प्राय: दो पंक्तियोंमें लिखा जाता है इससे यह न समझना चाहिये कि इसके दो चरण हैं, नहीं चरण चार हैं।

१—राम झरोके बैठके = मात्रा १३

२—सबका मुजरा लेत = " ११

३—जैसी जाकी चाकरी = " १३

४—तैसा ताको देत = " ११

ध्यान रहे कि १३, ११ मात्राकी गिनती पूरी कर देनेसे काम नहीं चलता, ध्वनि (लय) सिद्ध होनी चाहिये जंसे

गगनमें एक पक्षसों, १३ विहङ्ग उड़ नहिं सकत ११

पहले चरणमें १३ और दूसरेमें ११ मात्रा होने पर भी दोहा नहीं हुआ, हां यदि यूं कहें।

एक पक्ष सों गगनमें, उड़ नहिं सकत विहङ्ग

तो दुरुस्तहै। ध्वनि ठीक रहनेके लिये कुछ नियम लिखतेहैं:-

क—सम चरणके अन्तमें गुरु लघु ऽ। होना चाहिये। यहीं तुक हो।

उड़ नहिं सकत "विहङ्ग"

ख—विषम चरणके अन्तमें लघु गुरु। ऽ हो, या "नगण"

दोनों उदाहरण निम्न लिखित दोहेमें मौजूद हैं

सन्त सरल चित जग "त, हित" जानि स्वभाव सनेहु

बाल विनय सुनि करि "कृपा" रामचरण रति देहु।

ग—चरणकी आदिमें मगण आ जाय तो उसके बाद "।ऽ" न लाना चाहिये

घ—किसी चरणकी आदिमें जगण ।ऽ।, रगण ऽ।ऽ, तगण ऽऽ।, यगण ।ऽऽ, न आने पाय। हां दो शब्दों के संयोगसे वर्जित गण उत्पन्न होजाय तो हानि नहीं।

उदाहरण

निर्दोष		सदोष
चढ़ी अटारिन देखहीं०	(ज)	किताव लेकर हाथमें०
राम प्रेम भाजन भरत०	(र)	राधिका मिली वाटमें०
सीता अनुज समेत प्रभु०	(त)	संसारमें सार कछु०
उमा एक निज प्रभुहि वश०	(य)	यशोदा सुवन कृष्णजी०

दोहा जितना आसानहै उतनाही कठिनभी है यदि मात्राओं की गिनतीमें फंसनेसे भाषा गुट्ठल होगयी, बोलचालके विरुद्ध दूरान्वय होगया तो कहा जायगा कि छन्दकी सरलता सुगमतासे कुछ लाभ न उठाया। इस स्वयं-सिद्ध ध्वनिका आनंद जब है कि भाषा मधुर और सरल रहकर छन्द शुद्ध हो।

यद्यपि यह व्याख्यान पिङ्गलशास्त्रसे पृथक् है परन्तु हमारा उद्देश विद्यार्थियोंको निरा Mold Keeper (सांचोंका रक्षक) बनाना नहीं बल्कि कवि बनाना है, केवल सांचे हाथोंमें होनेसे क्या बनेगा? सांचोंमें ढालनेकी धातु भी उत्तम होगी तो क़ीमती खिलौना निकलेगा। अस्तु।

नियम, ध्वनि, अभ्यास, अटकल इत्यादिके आधार पर छन्द शुद्ध लिख लेना ही काफ़ी नहीं है क्योंकि शुद्धोंमें भी

उत्तम, मध्यम, कनिष्ट श्रेणीके पद्य बन जाते हैं, देखिये—यह एक दोहा है

निन्दक हैं जो दुष्ट जन,
कर उन पर अहसान।
टुकड़ा आगे डालदे,
फिर नहिं भौंके श्वान॥

इसके पहले चरणको भिन्न भिन्न क्रमसे लिखते हैं:——

१—जो हैं निन्दक दुष्टजन
२—जो निन्दक हैं दुष्टजन
३—हैं जो निन्दक दुष्टजन
४—निन्दक हैं जो दुष्टजन
५—निन्दक जन जो दुष्ट हैं

पिङ्गलका काम तो इतना ही है कि केवल छन्द शुद्धाशुद्ध बता दे। छन्दके लिहाज़से पांचों शुद्ध हैं परन्तु पांचोंमें श्रेष्ठ कौनहै ? जो बोल-चालके अनुसारहो, जिसमें दूरान्वय न हो।

यदि हम उक्त पदको गद्यमें लिखें या बात चीतके तौर पर बोलें तो यूं बोलेंगे

१—जो दुष्टजन निन्दक हैं
२—जो निन्दक दुष्टजन हैं
३—दुष्टजन जो निन्दक हैं
४—निन्दक जो दुष्टजन हैं

पांचवां रूप "निन्दक जन जो दुष्ट हैं" ग्राह्य नहींहै क्योंकि

अव्वल तो यह पद्यशैली धारण किये हुए है, दूसरे सामान्य और विशेषकी अपेक्षासे दुष्टजन सामान्य है उनमें निन्दाकी विशेषता आजाती है इसीसे "जन" "दुष्ट"के साथ ही सार्थक है तो इस पाँचवें रूपको छोड़ कर उक्त चारों पर विचार करते हैं

चारों पर ग़ौर करनेसे मालूम होगा कि "दुष्ट" और "जन" चारों वाक्योंमें समान रूपसे आया है, कहीं भी "जन दुष्ट" नहीं आया, छन्दकी आज्ञासे इसे विषम चरणके अन्त ही में स्थान मिला है अतः इसकी जगह तो मुक़र्रर होगयी। रहे तीन शब्द, इन्हें कहां विठाएं? देखिये गद्यके चारों रूपोंमें कोई रूप भी ऐसा नहीं जो "हैं" से आरम्भ हुआ हो इस नियमसे पद्यका तीसरा रूप (हैं जो निन्दक दुष्टजन) विलकुल उड़ गया।

गद्य, क्रियापदको वाक्यके अन्तमें लेता है (देखो प्रासपुंज तुलनात्मक विचार) इन तीन शब्दोंमें "हैं" क्रियापद है इसे निन्दकके वाद स्थान दिया जाय तो "निन्दक हैं" वन जायगा, इस नियमसे "जो हैं निन्दक दुष्टजन" यह पहला रूप भी उड़ गया। उधर दूसरा और चौथा पद्य वाक़ी है (क्योंकि पांचवाँ पद अर्थ और मुहावरेके अनुकूल न होनेसे छोड़ दिया गया) इधर "जो" शब्द वाक़ी है यह "दुष्टजन" के पूर्व वलवान रहता है अतः दूसरा रूप "जो निन्दक हैं दुष्टजन" भी उड़ गया। अव चौथा रूप "निन्दक हैं जो दुष्ट न"

यही सर्वोत्तम है। इसी क्रियासे चारों चरणोंको जांचनेसे दोहा यूं बनेगा।

निन्दक हैं जो दुष्टजन कर उनपर अहसान,
टुकड़ा आगे डालदे फिर नहिं भौंके श्वान।

हर छन्दमें इसका ध्यान रखना उचित है।

४४ सोरठा दोहेके पहले चरणको दूसरा, दूसरेको पहला। इसी तरह तीसरेको चौथा, चौथेको तीसरा मानलें तो सोरठा होजाता है। बाक़ी सब नियम दोहेके अनुसार हैं। प्रास विषम चरणोंमें रहेगा, इस प्रासका नाम "विषमान्त्य" है।

(देखो हमारी पुस्तक "प्रास–पुंज" पृ० २)

(महावतारी—२५ मात्रा)

४५ गगनानङ्ग गगनानंग कला नव यति करि रच तुक ऽ।ऽ बीरदे
शब्द कठोर कुठार न हो जो, मनको चीरदे

४६ मुक्तामणि

मुक्तामणि रच छन्द तू तेरह रवि कर्णान्ते
पच्चिस कल सम्पूर्ण हों दोनों गुरु वर्णान्ते

४७ सुगीतका

सुगीतका लघु आदि दे रच, तिथि दस यती नन्द
विधी नियम यदि याद हों तो, उत्तम बने छन्द

(महा भागवत—२६ मात्रा)

४८ शंकर

सोलह दस यति डार बनाओ छन्द शंकर नन्द
जो विधिके अनुसार रचो तो हो महा आनन्द

४९ झूलना

मुनि सप्तमुनि,पुनि बाण यति,रच झूलना, तुकनन्द
विश्रामके, आधार पर, सुन्दर बनत, यह छन्द

५० गीतिका

गीतिका रच छन्द विधा भानु यति लग अन्त हैं
तीन, दश, सत्रह चुविस लघु मत्त इति पर्यन्त हैं

५१ गीता मनु भानु गीतामें यती, तुक अन्तमें धर नन्द
या विधि सरल होगी गती, होगा मनोहर छन्द

(नाक्षत्रिक–२७ मात्रा)

५२ सरसी षोड़श हर पर यति धर कर तू सरसी कर निर्माण
अर्थ रहे शब्दोंमें ऐसे जैसे तनमें प्राण

(यौगिक २८ मात्रा)

५३ हरिगीत

कल पांचवीं, पुनि बारवीं, उन्नीसवीं लघु लाइये
छब्बीसवीं भी है लघू, मुनि मुनि यती, धर जाइये

५४ ककुभा

सकल कला अट्ठाइस लाओ चरन चरनमें प्यारो
यती करो सोलह बारह पर ककुभा नाम उचारो

(महायौगिक २९ मात्रा)

५५ महाराष्ट्र, मरहट्टा

दश वसु यति जानो, पुनि हर मानो, तीन जगह विसराम
इस ढबसे आवे, चूक न जावे, हो मरहट्टा नाम
(महा तैथिक—३० मात्रा)

५६ ताटंक

एक चरण कुल तीस कलाका, नियम बद्ध जो आता है
सोलह चौदह यतो धरें तो ताटंका कहलाता है
(अश्वावतारी—३१ मात्रा)

५७ वीर

चौपाई चोपई मिलेसे वन जाताहै पूरा वीर
सोलह पन्द्रह यती कही है सजत वीर रसमें गम्भीर
(लाक्षणिक –३२ मात्रा)

५८ केतकी

सात डगण पहले लिखलेना उनके ऊपर दो गुरु लाना
सोलह सोलह यती बनाकर सरस केतकी छन्द बनाना

पाठ ८

हिन्दीमें उर्दू बहरें

कुछ नियम

१—किसी चरणको छन्दके नियत गण या मात्राओंके साथ तुलना करनेको उर्दूमें "तक़तीअ" कहते हैं।

२—तक़तीअ करते समय आवश्यकता हो तो गुरु वर्णको लघु मान लेते हैं। हिन्दीमें भी यह छूट जारी है परन्तु अन्तर यह है कि हिन्दी वाले सवैया आदि किसी किसी छन्दमें ही इस छूटसे लाभ उठाते हैं, वर्ण वृत्तोंमें कदापि नहीं, और उर्दू वाले हर बहरमें। भी का भि। किसी का किसि। से का स। थे का थ। "मेरी" को—मिरी, मेरि, मिरि। इसी तरह "तेरी" को भी। "मेरा" को—मेर, मिरा, मिर। इसी तरह तेरा को भी। यह, ये को "य"। वह, वो को "व" मानने में हानि नहीं। सातों विभक्तियोंके प्रत्यय गुरुसे लघु होते रहते हैं जैसेः—

नथी हाल की अपने मुझे जो ख़बर
तो मैं तकता था औरों के ऐबो हुनर
पड़ी अपनी बुराइयों पर जो नज़र
तो निगाह में कोई बुरा न रहा

यह शेर इस तरह पढ़ा और गिना जायगा

नथि हाल कि अपन मुझे जु ख़बर
त म तकत थ और क ऐब हुनर
पड़ि अपनि बुराइयँ पर जु नज़र
त निगाह मँ कोइ बुरा न रहा

३—अरबी भाषाके अनेक शब्द ऐसे उर्दू में सम्मिलित हैं जिनमें अक्षर लिखे तो जाते हैं परन्तु पढ़े नहीं जाते, वो तुलनाके समय गिनतीमें नहीं आते। इस प्रकार उर्दू अक्षर दो प्रकारके हैं-
(क) मलफ़ूज़ी—जो लिखे जाते और उच्चारणमें भी आते हैं,
(ख) मकतूबी—जो लिखे जाते, परन्तु बोले नहीं जाते Silent।
हर्षकी बात है कि हिन्दीमें यह रोग नहीं है जो कुछ लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है इसलिये इस नियमका विस्तार व्यर्थ है।

४—जब अकार के बाद कोई अन्य स्वर आता है तो कभी कभी आवश्यकतानुसार इस अकारका लोप हो जाता है और उस व्यञ्जनमें (जिसमें यह अकार था) अगला स्वर मिल जाता है। यह अलिफ़ेवस्लका विकार है जैसे—

उठालूं सख़्तियां सौ सौ कड़ी "बात उठ" नहीं सकती
इसे यों पढ़ेंगे— कड़ी बातुठ नहीं सकती

और यों ही तक़्तीअमें गिनेंगे

अलिफ़ और ऐनका उच्चारण एकसा है, हां "क़ारी" लोग (जो क़ुरआने करीमकी क़िरअत (सस्वर) से पढ़ना जानते हैं वो) इसका फ़र्क़ ज़ाहिर कर सकते हैं साधारण मनुष्यों के लिये एक ही है जैसे :—

ऐनसे आरम्भ			अलिफ़से आरम्भ	
अबदुलहकीम,	असमत	(अ)	अबलक़,	अबतर
आलम,	आलिम	(आ)	आबाद,	आख़िर
इबरत,	इबादत	(इ)	इरादा,	इशार
ईसा,	ईद	(ई)	ईश्वर,	ईख
उस्मान,	उमदा	(उ)	उस्ताद,	उलफ़त
ऊद,	ऊज़	(ऊ)	ऊन,	ऊखल

इसभ्रममें प्रायः अलिफ़े वस्लकी तरह ऐनका लोप कर देते हैं वह अशुद्ध है ।

शोक है कि हम कोई चिह्न ऐसा नहीं बता सकते जिससे ऐन और अलिफ़ की पहचान हो जाय । हिन्दी वाले इसमें भूल जाएं तो आश्चर्य नहीं, उर्दू वालोंने भी कहीं कहीं इसमें ग़ोता खाया है । इसलिये हमारी सम्मति यह है कि ऐसे शब्दका प्रयोग ही न करें तो उत्तम है । यदि उर्दू द्वारा ऐन और अलिफ़ का ज्ञान है तो वे खटके लिख सकते हैं ।

५—जिस प्रकार हिन्दी पिङ्गल लघु गुरु पर निर्भर है, इसी प्रकार उर्दू अरूज़का दार मदार साकिन और मुतहर्रिक दो चिह्नों पर है । ये दोनों लघुगुरुका पर्य्याय नहीं, किन्तु दो मूल चिह्न हैं ।

लघु गुरु मिलमिलाकर आठ गणोंका रूप धारण कर लेतेहैं । साकिन मुतहर्रिक भी आगे पीछे होनेसे दस अरकान बनजाते हैं आपको उस झमेलेमें न फँसा कर सीधे मार्गसे ले चलते हैं ।

६— उर्दू बहरका नाम लिखकर उसका रूप लघु गुरु चिह्नोंमें दिया जायगा, इस तरह यह एक वर्ण वृत्त हो जायगा।

उर्दूकी कोई बहर ऐसी नहीं जो हिन्दी छन्दमें मौजूद न हो। यह पहेली प्रस्तार ने पहले ही पृ० २० पर बता दी है।

७ - वर्ण वृत्तमें यह स्वतंत्रता नहीं है कि गुरुके स्थानमें दो लघु लिख लें परन्तु उर्दू बहरोंमें एक शर्तके साथ गुरुके स्थानमें दो लघु लिख सकेंगे। इस तरह पर देखनेमें यह एक मात्रिक जाति हो जायगी।

शर्त यह है

जब गुरुके स्थानमें दो लघु लिखें तो पहले लघुमें कोई भी ह्रस्व स्वर हो परवा नहीं, परन्तु दूसरे लघुमें इ, उ, ऋ, न हो केवल अकार हो, वह भी ऐसा जिसे हल् पढ़नेमें कोई रुकावट न हो अर्थात् जिन्हें सस्वर लिखकर भी नस्वर बोलते हैं जैसे:—

हम, तुम, कब, जब, अब, इस, उस, चल, इत्यादि

उर्दूमें इनका वास्तविक रूप

हम्, तुम्, कब्, जब्, अब् इस्, उस् चल् है। हल् अक्षर अपने पूर्वको गुरु करके स्वयं नष्ट हो जाता है इस कारण दोनों लघु भी एक गुरु ही हो जाएंगे इसके अनुसार निर्भय हो कर उर्दू बहरोंमें लिखिये, छन्द शुद्ध रहेगा।

८—छन्दके रूपमें जहां लघु लिखा है वहां सदैव लघु ही लाना चाहिये।

पाठ १

उर्दूमें मूल बहरें १९ हैं

१, हज़ज–मुसम्मन–सालिम

अर्थ

हज़ज़—नाम

मुसम्मन—आठ रुक्नवाली। रुक्नको लगभग गण समझिये।

सालिम—अखण्डित, जिसमें कोई विकार या टूट फूट न हो

ख़बुन, क़ब्ज़, कफ़, इत्यादि २७ + २ = २९ ज़िहाफ़ अर्थात् सूत्र हैं, जिनके लगने से गणमें विकार उत्पन्न हो कर कुछ का कुछ रूप बन जाता है। इन सूत्रोंके प्रभावसे विकृतगणकी मात्राओंमें भी कमी बेशी हो जाती है। जिस बहरमें कोई विकृत गण आ जाता है उसे सालिम नहीं कहते किन्तु उस सूत्रका तद्धित शब्द (जैसे ख़बनका मख़बून, क़ब्ज़का, मक़बूज़, कफ़का मकफ़ूफ़) बहरके नाममें जोड़ देते हैं

भेदोंके नाम इसी प्रकार बनते हैं;

हज़ज बहरके रुक्न हैं—मफ़ाईलुन् ४ बार, एक मिसरा

मफ़ाईलुन् ४ बार, दूसरा मिसरा

दो मिसरे मिलकर एक शेर (बैत) होता है,

दोनों मिसरोंके गण आठ हुए इसलिये मुसम्मन है।

कोई गण खण्डित नहीं है इसलिये सालिम है।

मफ़ाईलुन्‌का रूप है— । S S S

इसे चार बार लिखनेसे मिसरेका रूप यह होगा

। S S S, । S S S, । S S S, । S S S

मालूम हो गया कि यह बहर २८ मात्रा या १६ वर्ण वाली है, हिन्दीके कुलाधारी छन्दके दो चरण हों तो इसका एक मिसरा पूरा होता है।

कुलाधारी :—य+र+ग+ग, इसे दो बार लिखनेसे वही उक्त रूप बन जायगा। १६ वर्णके प्रस्तारमें यह ४३७० वां रूप है। इसकी १, ८, १५ और २२ वीं मात्रा अवश्य लघु रहनी चाहिये। शेष गुरु वर्ण पाठ ८ पृष्ठ ८८ नियम ७ की शर्तके अनुसार गुरु अथवा लघु हों तो हानि नहीं।

उदाहरण

१—जिसमें कहीं भी गुरुके बदले दो लघु नहीं हुए

खड़े थे और भी तो तीन, स्वामीके वहां चेले

। S S S । S S S । S S S । S S S

२ एक गुरुके स्थानमें दो लघु

अलग अब हो गया जो मिल गया था दूध पानीमें

(नियम ३)

३—अकारका लोप (अलिफ़वस्ल)

हमें लाज़िम है सच्चे दिलसे गुन गाएं मुदाम-उनका

(मुदामुनका, नियम ४)

हज़जके भेद

भेद बहुत हैं परन्तु हम वही लिखेंगे जो प्रचरित हैं

क—मफ़्ऊल, मफ़ाईल, मफ़ाईल, फ़ऊलान

SS। ।SS। ।SS। ।SS।

मुः आय नज़र साफ़ वो है यारकी तलवार

आईनेका आईना है तलवारकी तलवार

ख—ऊपरकी वहरमेंसे अन्तिम लघु कम करें

मफ़्ऊल, मफ़ाईल, मफ़ाईल, फ़ऊलुन्

SS। ।SS। ।SS। ।SS

आज़ाद हुआ देश जहां, स्वर्ग वहां है

ग—मफ़्ऊल, मफ़ाईलुन्, मफ़्ऊल, मफ़ाईलुन्

SS। ।SSS SS। ।SSS

आवाद हो घर कैसे जब घर ही नहीं अपना

घ—फ़ाइलुन्, मफ़ाईलुन्, दो वार

S।S ।SSS S।S ।SSS

देशका भला होगा, वेशसे स्वदेशीके

ङ—मफ़ाइलुन्, ४ वार ।S।S ४ वार

हिंदीमें इस ध्वनिका नाम "नाराच" और „पंचचामर" है

वहीं वसें विभूतियां जहां वसे स्वतंत्रता

च—पिछले दो अक्षर कम करनेसे आनन्द छन्द बनता है

ख—उक्त बहरमेंसे अन्तिम लघु कम करें। शुद्ध गीतिका।

एक है "आसन" "मुसल्ला" सबके अरमाँ एक हैं

इश्क़की सरकारमें हिन्दू मुसल्मां एक हैं

यदि लघु गुरुका क्रम भ्रष्ट न हो और निम्न गणोंमें चरण बनाया जाय तो ध्वनि यही रहेगी परन्तु छन्द "सीता" हो जायगा, सीताके गण हैं—

र + न + म + य + र

SIS + SSI + SSS + ISS + SIS

ग—फ़ाइलातुन, फ़इलातुन, फ़इलातुन, फ़इलुन

SISS, IISS, IISS, IIS

रात भर दर्दने बीमारको सोने न दिया

घ—तीन रुक्न उपरोक्त, चौथा SS

तंग हमसाये हुए दिल न पसीजा उसका

ङ—फ़ाइलात, फ़ाइलात, फ़ाइलात, फ़ाइलुन

हिन्दीका शुद्ध चामर छन्द

SISISISISISISIS

बेचिये ख़रीदिये सदा स्वदेश-वस्तुको

च—फ़ाइलातुन, फ़ाइलातुन, फ़ाइलान

SISS, SISS, SISI

हम न बन जाते अगर आलस्य-धाम

तो न होते आज ग़ैरोंके गुलाम

छ—उक्त बहरका अन्तिम लघु दूर करें

शनती प्यारी कहाँ जाती रही
लच्छमी सारी कहाँ जाती रही

४, वाफ़िर

प्रचरित नहीं

५, कामिल मुसम्मन सालिम

मुतफ़ाइलुन् ४ वार— । । ऽ । ऽ ४ वार

कई गणोंकी तरह इस गणकी मात्रा भी सात हैं परंतु रजज़के मुस्तफ़्इलुन् (ऽ ऽ । ऽ) से इसे बचानेमें ज़रा सावधानी की ज़रूरत है, क्योंकि अंतर केवल यही है कि वहां पहली मात्रा गुरु है, यहां पहली और दूसरी लघु। दो लघुके बदले एक गुरु न आ जाय। दोनों लघु भी ऐसे हों जिनमें दूसरे लघु को हल् न मान सकें।

ये विचार है बड़े शोकका ये मुक़ाम है अति क्लेशका
कि हमारी लाश पे देखिये जो कफ़न पड़ा तो विदेशका

६, मुतक़ारिब मुसम्मन सालिम

शुद्ध भुजङ्गप्रयात

फ़ऊलुन् ४ वार– । ऽ ऽ ४ वार

(देखो पृ० ५७)

क—भुजङ्गप्रयातके अंतमें एक लघु बढ़ाए

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ ।

जो है देश द्रोही वही है महा नीच*

हिन्दीमें इसका नाम "कंद" है

ख—भुजङ्गप्रयातके अंतिम गुरुको लघु करें

मुझे रात दिन है तुम्हारा ख़्याल

ग—उपरोक्त बहरका अंतिम लघु कम करें

शुद्ध भुजङ्गी (देखो पृ० ५६)

घ फ़ऊल, फ़ेलुन् ४ बार— । ऽ । ऽ ऽ चार बार

हमें समझ कर निरे अनाड़ी वतनसे निकली रुई हमारी

फिर आई सोनेके तार बनकर डबल हजामत हुई हमारी

७, मुतदारिक [ग़रीब]

मुसम्मन-सालिम

फ़ाइलुन् ४ बार— ऽ । ऽ चार बार

हिन्दीमें स्रग्विणी

क्या कहूं मैं गिला यारने क्या किया

प्यारके नामसे खूब धोका दिया

क फ़इलुन् १६ बार (दो मिसरे)

। । ऽ तोटकका दूना, दुमिला सवैया

* उदाहरणोंमें जान कर एक गुरुके स्थानमें दो लघु और ऐसे प्रकार लाये गये हैं जो गुरु लिखा कर भी लघु गिने जायं जिससे विद्यार्थियोंको दलील ठीक मालूम हो जाय।

ज़फ़र आदमी उसको न जानियेगा

वो हो कैसा ही साहिबे फ़हमो ज़का

जिसे ऐशमें यादे खुदा न रही

जिसे तैशमें ख़ौफ़े खुदा न रहा

८, तवील

इसका प्रचार नहीं है

प्राय: लोग लम्बे मिसरे देख कर चाहे जिस बहरको तवील कह देते हैं, यह भ्रम है। इसके रुक्न हैं

फ़ऊलुन्, मफ़ाईलुन्— दो वार

। ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ ,, ,,

९, मदीद मुसम्मन सालिम

फ़ाइलातुन्, फ़ाइलुन्, दो वार

ऽ । ऽ ऽ, ऽ । ऽ, ऽ । ऽ ऽ, ऽ । ऽ

स्वर्ग की है चाह तो देश सेवा कीजिये

यज्ञ फल मिल जायगा आहुती तो दीजिये

१०, ख़फ़ीफ़

इसके केवल भेद हिन्दी वालोंके कामके हैं

क—फ़ाइलातुन्, मफ़ाइलुन्, फ़ेलुन्

ऽ । ऽ ऽ, । ऽ । ऽ, ऽ ऽ

रह सकेगा न इस ज़मानेमें

ज़ाग़ बुलबुलके आशियानेमें

ख—फ़ाइलातुन्, मफ़ाइलुन्, फ़इलुन्

ऽ।ऽऽ, ।ऽ।ऽ, ।।ऽ

तुमने वादा कोई वफ़ा न किया

अब तुम्हारा यक़ीन कौन करे

उक्त दोनोंमें से चाहे जिसके अन्तमें एक लघु बढ़ावें

ग—ऽ । ऽ ऽ, । ऽ । ऽ, ऽ ऽ ।

घ—ऽ । ऽ ऽ, । ऽ । ऽ, । । ऽ ।

दे रहा है दुआ दिले बेताब

हो न मिश्रोंका कोई छन्द ख़राब

उक्त चारों बहरोंका मिश्रण भी अशुद्ध नहीं होता है

११ वसीत

१२ सरीअ

१३ जदीद

१४ क़रीब

१५ मुन्सरह

१६ मुज़ारा

१७ मुक्तज़ब

१८ मुजतस

१९ मुतशाकिल

ये बहरें क्लिष्ट अर्थात् फ़ारसीमें ही काम आती हैं, उर्दूवाले इन्हें लिख सकते हैं परन्तु ध्वनि मधुर न होने से नहीं लिखते।

पाठ १०

रुबाई

रुबाईका साधारण अर्थ चार मिसरे वाली है, इसी भ्रममें प्राय: लोग हर एक चार मिसरेवाले पद्यको रुबाई लिख देते हैं वास्तवमें रुबाई हज़जके भेदोंमें विशेष रूपोंका नाम है जो २४ हैं। इनके अतिरिक्त अन्य छन्दमें चार मिसरे होंगे तो रुबाई नहीं माने जाएंगे।

वो २४ वज़न ये हैं।

मफ़ऊल,	मफ़ाईल,	मफ़ाईल,	फ़ऊल
ऽ ऽ ।	। ऽ ऽ ।	। ऽ ऽ ।	। ऽ ।

काँटा है हर एक जिगरमें खटका तेरा
हलक़ा है हर एक गोशमें लटका तेरा
माना नहिं जिसने तुझे, जाना है ज़ुरूर
भटके हुए दिलमें भी है खटका तेरा

इस रुबाई का तीसरा चरण।

मफ़ऊल	मफ़ाइलुन्	मफ़ाईल	फ़ऊल
ऽ ऽ ।	। ऽ । ऽ	। ऽ ऽ ।	। ऽ ।

जब लेते हैं घेर तेरी कुद्रतके ज़हूर
मुनकिर भी पुकार उठते हैं तुझको मजबूर
ख़फ़फ़ाशको ज़ुल्मतकी न सूझी कोइ राह
खुर्शीदका शश जहतमें फैला जब नूर

इसका पहला चरण।

मफ़ऊल   मफ़ाईलुन्   मफ़ऊल   फ़ऊल

ऽ ऽ ।   । ऽ ऽ ऽ   ऽ ऽ ।   । ऽ ।

क़द सर्व है, रुख़ गुल है, सम्बुल है वह ज़ुल्फ़

मफ़ऊल   मफ़ाईल   मफ़ाईल   फ़इल्

ऽ ऽ ।   । ऽ ऽ ।   । ऽ ऽ ।   । ऽ

फलता नहीं दुन्यामें दग़ाबाज़ कभी

मफ़ऊल   मफ़ाइलुन्   मफ़ाईल   ,,

ऽ ऽ ।   । ऽ । ऽ   । ऽ ऽ ।   ,,

मिट्टीसे, हवासे, आतिशो,-आबसे यहां
क्या क्या न हुए बशर पे इसरार अयां
पर तेरे *ख़ज़ानेमें अज़लसे अबतक*
गंजीनए-ग़ैब हैं उसी तर्ह निहां

इस रुबाईका पहला और दूसरा चरण

मफ़ऊल   मफ़ाईलुन्,   मफ़ऊल,   फ़इल्

ऽ ऽ ।   । ऽ ऽ ऽ   ऽ ऽ ।   । ऽ

आंखें हैं गुले-नर्गिस, गुनचा है दहन

मफ़ऊल   मफ़ाईल   मफ़ाईलुन्   फ़ाअ

ऽ ऽ ।   । ऽ ऽ ।   । ऽ ऽ ऽ   ऽ ।

हस्तीसे है तेरी रंगोबू सबके लिये
ताअतमें है तेरी, आबरू, सबके लिये
हैं तेरे सिवा सारे सहारे कमज़ोर
सब अपने लिये हैं, और तू सबके लिये

इसका तीसरा चरण

८ मफ़्ऊल मफ़ाइलुन् मफ़ाईलुन् . फ़ाअ

SS। ।S।S ।SSS S।

क्या होगी दलील तुझपे और इससे ज़ियाद
दुन्यामें नहीं है एक दिल जोकि हो शाद
पर, जो कि हैं तुझसे लो लगाये बैठे
रहते हैं हर एक रंजोग़मसे आज़ाद

इसका चौथा चरण।

९ मफ़्ऊल मफ़ाईलुन् मफ़्ऊलुन् फ़ाअ

SS। ।SSS SSS S।

भगवान बनाता है भक्तोंके काम

१० मफ़्ऊल मफ़ाईल मफ़ाईलुन् फ़े

SS। ।SS। ।SSS S

रुबाई नं० १ (काँटा है०) का दूसरा चरण

११ मफ़्ऊल मफ़ाइलुन् मफ़ाईलुन् फ़े

SS। ।S।S ।SSS S

कांटा है हर एक जिगरमें खटका तेरा

१२ मफ़्ऊल मफ़ाईलुन् मफ़ऊलुन् फ़े

SS। ।SSS SSS S

जो देश पे मरते हैं जी जाते हैं

१३ मफ़्ऊलुन् मफ़्ऊल मफ़ाईल फ़ऊल

SSS SS। ।SS। ।S।

क़ाबू हो दिलपे है वही सत्य स्वराज्य

मफ़्ऊलुन्   फ़ाइलुन्   मफ़ाईल   फ़ऊल

१४   SSS   S I S   I S S I   I S I.

हैं झूठके सचमें सब समोने वाले
बन्ने वालों से कम हैं होने वाले
घड़ियां रहती हैं जिनकी जेबोंमें मुदाम
अक्सर हैं वही वक्त के खोने वाले

इसका तीसरा चरण।

मफ़्ऊलुन्,   मफ़्ऊलुन्   मफ़्ऊल   फ़ऊल

१५   S S S   S S S   S S I   I S I.

योगी से पूछो है संसार असार

मफ़्ऊलुन्   मफ़्ऊल   मफ़ाईल   फ़इल्

१६   S S S   S S I   I S S I   I S

दुष्टों का करना कभी विश्वास नहीं

मफ़्ऊलुन्   फ़ाइलुन्   मफ़ाईल   फ़इल्

१७   S S S   S I S   I S S I   I S

लिक्खे मूसा पढ़े खुदा, सच है मसल

मफ़्ऊलुन्   मफ़्ऊलुन्   मफ़्ऊल   "

१८   S S S   S S S   S S I   "

रोना भी चाहो तो रोते न बने

मफ़्ऊलुन्   मफ़्ऊल   मफ़ाईलुन्   फ़ाअ

१९   S S S   S S I   I S S S   S I.

वे पिङ्गल है छन्द निहायत दुशवार

२०	मफ्ऊलुन्	फ़ाइलुन्	मफ़ाईलुन्	फ़ाअ
	SSS	SIS	ISSS	SI

गाना क्या जब न हो गले में तासीर

२१	मफ़ऊलुन्	मफ़ऊलुन्	मफ़ऊलुन्	”
	SSS	SSS	SSS	”

छन्दोंको समझा देगा पिङ्गलसार

२२	मफ्ऊलुन्	मफ्ऊल	मफ़ाईलुन्	फ़े
	SSS	SSI	ISSS	S

सुनता है जो राम कहानी मेरी

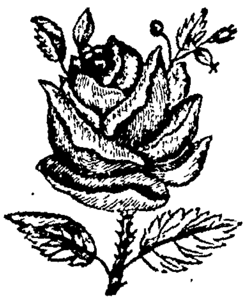
२३	मफ्ऊलुन्	फ़ाइलुन्	मफ़ाईलुन्	”
	SSS	SIS	ISSS	”

देखा तो मतलबी ज़माना देखा

२४	मफ्ऊलुन्	मफ्ऊलुन्	मफ्ऊलुन्	”
	SSS	SSS	SSS	”

गाढ़ा पहनोगे तो अच्छा होगा

इन २४ भेदोंका मिश्रण शुद्ध माना गया है।



पाठ ११

ध्वन्यात्मक छन्द

जो छन्द वर्णात्मक, कलात्मक दोनोंकी सीमासे बाहर हो, अर्थात् चरणमें लघु गुरुका क्रम भी दुरुस्त न हो और मात्राएं भी समान न हों वह ध्वनिके आधारपर लिखा जाता है जो किसी सुकविके समक्षमें ही सिद्ध हो सकती है

मात्रिक छन्दोंमें यद्यपि नियम लिखे गये हैं तथापि उनमें भी ध्वनि मुख्य वस्तु है। इसीके सहारे छन्दोंके नामादि स्थिर होते हैं। इस हिसाबसे कोई छन्द वर्ण या मात्राके चक्करसे निकल भी गया है तो भी वह नियमके बन्धनसे नहीं निकला, कुछ नहीं तो ध्वनिका अड़ङ्गा उसके पीछे लगा हुआ है, जो उक्त दोनोंकी अपेक्षा दुस्साध्य है, क्योंकि उनमें तो वर्णों का क्रम अथवा किसी विशेषताके साथ मात्राओंकी गिनती ध्वनिको बिगड़ने नहीं देती, इनमें केवल ध्वनिका राज्य होनेसे निरी निरंकुशता कहींसे कहीं ले पहुंचे तो आश्चर्य नहीं। इस लिये उचित है कि ध्वनि किसी जानने वालेसे सिद्ध करलें।

कवित्त

यों तो सब छन्द कवितावद्ध होनेसे कवित्त हैं परन्तु कवियों-की परिभाषामें एक विशेष छन्दका नाम कवित्त हो गया है। उस के मुख्य तीन भेद पाये जाते हैं। यथा—

१-मनहर

लघु गुरुका नियम नहीं, मात्राओंकी गिनती नहीं, २१ अक्षर, ८+८+८+७ पर यति, अन्तिमाक्षर गुरु।

आठ आठ तीन वार, पुनि सात अन्त गुरु,
मनहर छन्द रच ध्वनिकी सहाय सों।

२-घनाक्षरी

मनहर और घनाक्षरीमें केवल यही अन्तर है कि उसमें आठ आठ पर यति है, इसमें १६+१५ पर, ध्वनि समान है

कला और तिथिपे विराम धरि अन्त गुरु
इकतीस वर्ण लाय रचिये घनाक्षरी।

३-रूप घनाक्षरी

घनाक्षरीके अन्तमें एक लघु बढ़ानेसे बनता है

रूपक घनाक्षरीमें बत्तिस वरण डारि
लघु अन्त सोरह सोरह कीजिये विराम ताहि

सवैया

मत्त गयन्द, सुमुखी, चकोर, दुमिला, किरीट इत्यादि छन्दों-का वर्णन पाठ ६ में हो चुका है, यह सब सवैया नामसे विख्यात हैं, परन्तु प्राचीन कवियोंने इन वर्णात्मक छन्दोंको ध्वन्यात्मक बना लिया है। लघु गुरुका लघुत्व और गुरुत्व लिखावटके आधार पर नहीं बल्कि उच्चारके आधार पर माना है इसमें यदि लघु गुरु-

का क्रम यथा नियम रहसके तो अत्युत्तम है वर्नः ध्वनि अवश्य-मेव शुद्ध रहनी चाहिये; नहीं तो वही मसल होगी

गये दोनों जहानके कामसे हम न इधरके हुए न उधरके हुए
न ख़ुदा ही मिला न विसालेसनम न इधरके हुए न उधरके हुए

ध्वनिकी आज्ञासे किसी गुरुको लघु माना जता है तो भी लिखनेमें उसे गुरु ही लिखते हैं। लिखावट बदल देनेसे अर्थका पता नहीं लग सकता। उदाहरणके लिये कविप्रिया जगद्विनोद आदि अनेक ग्रन्थ भरे पड़े हैं।

जीव उलपज्ञ, विद्या अनन्त। फिर हम इस विषयको कैसे सम्पूर्ण कर सकते हैं तथापि जितना इन थोड़े पृष्ठों में समागया है वह वर्तमान व्यवहारके लिये पर्याप्त है।

अन्तमें ईश्वरसे प्रार्थना है कि पाठकोंको इस विद्याका शुद्ध ज्ञान प्राप्त हो, यही हमारे उद्देशकी सफलता है।

इत्यो ३ म्

हिन्दी सुभाषित

जिन विद्वानोंने संस्कृत "सुभाषित रत्नभाण्डागारम्" नामक ग्रन्थ देखा है वह हिन्दी सुभाषित नाम सुनते ही इसका विषय जान लेंगे परंतु सर्वसाधारणको इसके गुणोंसे परिचित करते हैं:—

पण्डित प्रशंसा, मूर्खनिन्दा, अभ्यासमहिमा, अलस निन्दा, उद्यम महिमा, दानप्रशंसा, अन्याय निन्दा, कर्म फल, जैसेको तैसा इत्यादि अनेक विषयों पर अन्यान्य कवियोंके दोहे सोरठे चौपाई सवैये आदि छन्द एकत्रित किये गये हैं।

स्वतंत्र पुस्तक लिखनेवाले, अनुवाद करनेवाले, नाटककार, उपन्यास लेखक, व्याख्यान दाता, उपदेशक, कथा वाचनेवाले, समाचार पत्रोंके सम्वाद दाता इस पुस्तकसे बहुत लाभ उठा सकते हैं। वाणी और लेखमें इस सूक्ति संग्रहके सरस पद्योंसे वह मज़ा आ जायगा जो दाल शाकादिमें नमकसे आ जाता है।

मूल्य केवल १) रु०

नारायण शतक

नीतिके नवीन १०० दोहे कार्ड साइज़ ६४ पृष्ठ। आधे दोहेमें नीतिका उपदेश, आधेमें उसका दृष्टान्त है।

रचना रची सरस या फीकी
निजमुख नाहिं प्रशंसा नीकी,

=॥ के टिकट भेजनेसे मिलेगा।

मिलनेका पता:—

"बेताब प्रिंटिङ्ग वर्क्स"

चाह-रहट देहली।

दुर्गा

धार्मिक उपन्यास, स्त्रियों और कन्याओंके पढ़ने योग्य है, मूल्य ।≈)

रँगीला चर्खा

देशभक्ति उत्पन्न करने वाले पवित्र गीतों और भजनों का संग्रह है। चरख़े का इतिहास भी दिया है मूल्य ।-)

मूर्ख मण्डली

इस नाटक को पढ़कर आप हँसते हँसते लोट पोट हो जाएंगे बड़ा मनोरंजक प्रहसन है। मूल्य ॥≈)

पूर्व भारत

पौराणिक नाटक है उत्तरा के विवाह तक की कथा इस में आगयी है। मूल्य ॥।≈)

खाद

खेती करने वालों के बड़े कामकी चीज़ है। इसमें खादका विस्तृत वर्णन अमूल्य है इस पर भी मूल्य केवल १)

पदार्थ विद्या

पांच बरस से आठ दस बरस तकके बच्चोंको साइंस की आरंभिक बातों का ज्ञान बिना पुस्तक कराने का तरीक़ा उपन्यास रूप से लिखा है मूल्य ।)

कृष्णा कुमारी

ऐतिहासिक नाटक, जयपुर और मेवाड़ दोनों के भूपति जो उदयपुर के राणा भीमसिंह की कन्या कृष्णाकुमारी के साथ विवाह करना चाहते थे, दोनों की खेंच तानमें जो रक्तपात हो जाता, उसे कृष्णाकुमारीने किस तरह रोका और पिताको मुसीबत से बचाया, यह मनोहारिणी कथा इस नाटक में बड़े उत्तम ढंग से लिखी है मूल्य ॥।)